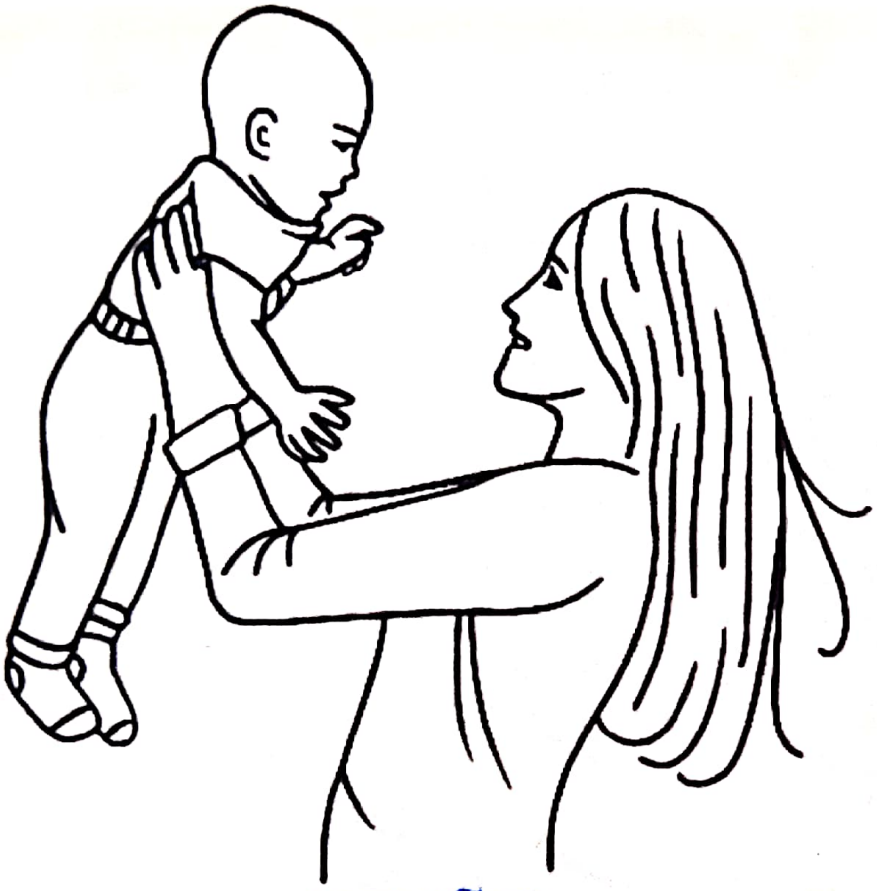

पुस्तक परिचय

अंतरराष्ट्रीय मातृ दिवस के अवसर पर प्रस्तुत इस पुस्तक में देश भर से अनेक सुप्रसिद्ध साहित्यकारों द्वारा जन्मदायिनी मां के प्रति अपनी श्रद्धा भक्ति एवं स्नेह भाव का वर्णन करती सुन्दर रचनाओं का संकलन करके पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

ISBN: 978-93-340-5373-9

Available on
kindle kobo amazon

Follow on

दिव्यज्योति साहित्यिक संस्थान रायपुर छत्तीसगढ़

माँ- ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान

मुकेश कुमार सोनकर

माँ

ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान

(साझा संकलन)

Principal
A.K.Singh College
Japla, Palamau

संकलन : मुकेश कुमार सोनकर

First published by Divyajyoti Publications

Raipur(Chhattisgarh), 492013

Email: divyajyotipublications.rpcg@gmail.com

Divyajyoti Publication, Raipur(CG)

Copyright ©Divyajyoti Publications

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the Author or Publishers.

Title: मां–ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान(साझा संकलन)

Language: Hindi

ISBN:- 978-93-340-5373-9

Price:-

No. of Pages:- 154

Compiled and designed By :- Mukesh Kumar Sonkar

Typeset in Times New Roman by Jyoti Sonkar

Cover page designed by Divyanshi

Printed by :-

Principal
A.K.Singh College
Japla, Palamau

अनुक्रम

क्र	संकलन में सहभागी रचनाकारों के नाम	पृष्ठ क्र.
1	आ. डॉ. आलोक रजन कुमार जी, पलामू झारखण्ड	8
2	आ. अशोक गोयल जी, पिलखुवा हापुड़ उत्तरप्रदेश	11
3	आ. डॉ. अनिता गोस्वामी जी, नोएडा	14
4	आ. अंजली सारस्वत शर्मा जी, लखनऊ उत्तरप्रदेश	17
5	आ. डॉ. जवाहर धीर जी, पंजाब	20
6	आ. सुमा मण्डल जी, पखांजूर कांकेर छत्तीसगढ़	25
7	आ. विद्याशंकर विद्यार्थी जी, रामगढ़ झारखण्ड	28
8	आ. अविनाश खरे जी, पुणे महाराष्ट्र	29
9	आ. प्रियंका भूतड़ा जी, बरगढ़ ओडिशा	32
10	आ. विशाल जैन 'पवा' जी, ललितपुर उत्तरप्रदेश	34
11	आ. सुनील कुमार जी, नकुड़ सहारनपुर उत्तरप्रदेश	37
12	आ. डॉ. नीलम पाण्डेय नीलिमा जी, खटीमा उत्तराखण्ड	39
13	आ. अंजना सिन्हा 'सखी' जी, रायगढ़ छत्तीसगढ़	41
14	आ. निधि बोथरा जैन जी, इस्लामपुर पश्चिम बंगाल	44
15	आ. गुड़िया गौतम जी, जलगांव महाराष्ट्र	46
16	आ. सुखमिला अग्रवाल 'भूमिजा' जी, जयपुर राजस्थान	48
17	आ. सुनीता प्रयाकर राव जी, वसूनी तेलंगाना	50
18	आ. मीना रावलानी जी, कोटा राजस्थान	52
19	आ. भानुप्रिया देवी जी, देवघर झारखण्ड	54
20	आ. दुर्गेश मोहन जी, बिहटा पटना बिहार	55
21	आ. पंकज सिंह दिनकर 'अर्कवंशी' जी, लखनऊ उत्तरप्रदेश	57
22	आ. डॉ. दक्षा जोशी 'निर्झरा' जी	58
23	आ. मृदुला वर्मा जी, कानपुर उत्तरप्रदेश	59
24	आ. अमन रंगेला 'सनातनी' जी, सावनेर नागपुर महाराष्ट्र	60
25	आ. उषा जोशी जी, देवास मध्यप्रदेश	61
26	आ. कुमार जितेन्द्र जी, उन्नाव उत्तरप्रदेश	62
27	आ. शिवनाथ सिंह 'शिव' जी, रायबरेली उत्तरप्रदेश	64
28	आ. राकेश राज भाटिया जी,थुरल कांगड़ा हिमाचल प्रदेश	66
29	आ. तरुण राय कागा जी, बाड़मेर राजस्थान	70
30	आ. रश्मि अग्रवाल जी, बिलासपुर छत्तीसगढ़	73
31	आ. मीनाक्षी सुकुमारन जी, नोएडा	75
32	आ. सुषमा खजुरिया जी, व्यासपुर हिमाचल प्रदेश	76
33	आ. रचना श्रीवास्तव जी, कोटा राजस्थान	78
34	आ. रविनारायण शुक्ल जी, लालगंज रायबरेली उत्तरप्रदेश	79
35	आ. रेणुबाला सिंह जी, गाजियाबाद उत्तरप्रदेश	80
36	आ. अशोक जाटव 'राही' जी,भोपाल मध्यप्रदेश	85
37	आ. मंजू शकुन खरे जी, दतिया मध्यप्रदेश	86
38	आ. लता सेन जी, इन्दौर मध्यप्रदेश	89
39	आ. सूर्यप्रकाश शर्मा 'निशिहर' जी, रायबरेली उत्तरप्रदेश	91
40	आ. शिवेंद्र कौशिक 'हंगामा धामपुरी' जी, दिल्ली	93
41	आ. आभा गुप्ता जी, इन्दौर मध्यप्रदेश	95
42	आ. शरीफ खान जी, रावतभाठा कोटा राजस्थान	96

Principal
A.K.Singh College
Japla, Palamau

43.	आ. सिमरन तोमर जी, अंबाह मुरैना मध्यप्रदेश	99
44.	आ. मेघा अग्रवाल जी, नागपुर महाराष्ट्र	100
45.	आ. सुरेश बछोर जी, तालपुरी भिलाई छत्तीसगढ	103
46.	आ. ईश्वर चन्द्र जायसवाल जी, संत कबीर नगर उत्तरप्रदेश	104
47.	आ. पिंकी मेहता शाह 'दिशा' जी, अहमदाबाद गुजरात	106
48.	आ. सुशील चन्द्र बाजपेयी जी, लखनऊ उत्तरप्रदेश	107
49.	आ. पुष्पा पारेश्वर जी, सरायपाली महासमुंद छत्तीसगढ	108
50.	आ. भैरूसिंह चौहान 'तरंग' जी, झाबुआ मध्यप्रदेश	109
51.	आ. छाया शाह 'सख्य' जी, मुम्बई	110
52.	आ. संदीप शर्मा जी, देहरादून उत्तराखण्ड	111
53.	आ. भारती श्रीवास्तव जी, छिंदवाड़ा मध्यप्रदेश	113
54.	आ. नरेन्द्र सोनकर 'कुमार सोनकरन' जी, प्रयागराज उत्तरप्रदेश	114
55.	आ. सुनीता अग्रवाल जी, गाजियाबाद उत्तरप्रदेश	117
56.	आ. थानू राम साहू जी, मुंगेली छत्तीसगढ	118
57.	आ. मिहुं अग्रवाल जी नागपुर महाराष्ट्र	120
58.	आ. सुनिता श्रीवास्तव जी, सुल्तानपुर उत्तरप्रदेश	121
59.	आ. विनय पाण्डेय जी, उत्तराखण्ड	122
60.	आ. सखी जी, लखनऊ, उत्तर प्रदेश	123
61.	आ. डॉ. रामनिवास तिवारी 'आशुकवि' जी, निवाड़ी मध्यप्रदेश	124
62.	आ. बलराम यादव जी, देवरा मध्यप्रदेश	125
63.	आ. ममता प्रीति श्रीवास्तव जी, गोरखपुर उत्तरप्रदेश	127
64.	आ. जयंती खमारी 'रूही' जी, रायगढ़ छत्तीसगढ	128
65.	आ. जयकुमार ठाकर 'मृत्युंजय योगी'जी सूरत गुजरात	130
66.	आ. डॉ. हरिभजन प्रियदर्शी जी, श्री मुक्तसर साहिब पंजाब	132
67.	आ. रमाकांत शर्मा जी, डांडेली कर्नाटक	134
68.	आ. डॉ. राजपाल जी, गंगानगर राजस्थान	137
69.	आ. डॉ. सपना जी, गंगानगर राजस्थान	138
70.	आ. विजय प्रताप कुशवाहा 'संगम' जी, कुशीनगर उत्तरप्रदेश	139
71.	आ. आनंद त्रिपाठी जी, मऊगंज मध्यप्रदेश	142
72.	आ. अनिल कुमार केसरी जी, राजस्थान	144
73.	आ. महेश सोनी 'कुमार अहमदाबादी' जी,	145
74.	आ. डॉ. जनक सिंह मीणा जी, गांधीनगर गुजरात	146
75.	आ. सायली त्रिकुटकर जी, नांदेड , महाराष्ट्र	148
76.	आ. डॉ. प्रो. मंजरी गुरु जी, रायगढ़ छत्तीसगढ	149
77.	आ. मुकेश कुमार सोनकर "सोनकर जी", रायपुर छत्तीसगढ	151

01/08/2024
Principal
A.K.Singh College
Japla, Palamau

------- *परिचय विवरण* -------

1. नाम : प्रो. डॉ. आलोक रंजन कुमार
2. माता-पिता का नाम : स्व. मानमती देवी स्व. राजा राम
3. पत्नी का नाम : रश्मि प्रकाश
4. जन्म तिथि : 23 - 02 – 1972 जन्म स्थान : जपला जिला : पलामू
5. शिक्षा : स्नातक - १. हिन्दी भाषा एवं साहित्य,२. रूसी भाषा एवं साहित्य, ३. वकालत, ४. शिक्षा विशारद।

स्नातकोत्तर - १. हिन्दी भाषा एवं साहित्य, २. भाषा विज्ञान, ३. अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य।

पी-एच. डी. - हिन्दी (पलामू कमिश्नरी की बोलियों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन -- भाषाएं : हिन्दी, मगही, भोजपुरी, नागपुरी, संथाली, मुंडारी, ब्रिजिया, बिरहोर, कोरवा, हो, कुंड़ूख कर (ओरांव भाषा)

6. वर्तमान में कार्य (पेशा) : हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं प्राध्यापक, ए के सिंह कॉलेज जपला तथा राज्य प्रमुख -- मानवाधिकार मिशन झारखण्ड
7. संस्थापक/अध्यक्ष : संस्थापक - गौरव साहित्य मंच पलामू , विश्ववाणी हिंदी संस्थान अभियान झारखण्ड, संयोजक - राष्ट्रवादी लेखक संघ झारखण्ड, राज्य प्रमुख - (स्वास्थ्य एवं सुरक्षा) मानवाधिकार मिशन झारखण्ड, अध्यक्ष- सोन घाटी पुरातत्व परिषद् पलामू ,झारखण्ड , संयोजक - अथाई आशा इंटरनेशनल साहित्य एवं समन्वय समूह झारखण्ड आदि।
8. हिंदी प्रचार के लिए किए गए उल्लेखनीय योगदान : विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं के माध्यम से हिंदी साहित्य सम्मेलन का आयोजन एवं सहभागिता।
9. लेखन विधा : कविता, दोहा, ग़ज़ल, हाइकु, सॉनेट, लघुकथा, कहानी, संस्मरण, निबंध, आलेख, साक्षात्कार
10. भाषा साहित्य/गायन वादन/अभिनय/शिक्षा / समाजसेवा / चिकित्सा के क्षेत्र में आपके द्वारा किया गया उल्लेख योगदान लिखें : प्रतिवर्ष लगभग सौ विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करना। काव्य पाठ, भक्ति वन्दना गायन
11. प्राप्त सम्मान/पुरस्कार : शताधिक अंतरराष्ट्रीय सम्मान/पुरस्कार तथा दो सौ से अधिक राष्ट्रीय सम्मान/पुरस्कार/ प्रशस्ति-पत्र/प्रमाण पत्र।
12. हाल का पद तथा दायित्व : हिन्दी विभागाध्यक्ष सह नैक को-ऑर्डिनेटर,ए के सिंह कालेज, जपला। उपरोक्त सभी पद पर आसीन।
13. अब तक प्राप्त मुख्य उपलब्धि : १. हिन्दी सचिवालय मॉरीशस तथा सृजन आस्ट्रेलिया से अंतरराष्ट्रीय अनेक सम्मान। २. तीन आर्य भाषा परिवार की मातृभाषाओं, छः मुंडा परिवार की मातृभाषाओं, तथा एक द्रविड़ परिवार की बोली पर शोध कार्य।
14. वर्तमान पता : "राजभवन" मुहल्ला - लम्बी गली, पोस्ट - जपला, जिला - पलामू, राज्य - झारखण्ड, पिन कोड – 822116

01/08/2024

Principal
A.K.Singh College
Japla, Palamau

माँ ईश्वर का सबसे बडा वरदान

माँ ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान
माँ का जग में सबसे ऊंचा पायदान

माँ श्रृष्टि के आरंभ में दी थी प्राणदान
ब्रह्मा विष्णु शिव को दी थी अभयदान

माँ तेरी शक्ति से जग क्यों अनजान
तू ही पूजा, तू ही भक्ति, देती वरदान

तूने ही दिया जुबान और आत्मज्ञान
माँ तुझको पाया तो पाया ये ब्रह्मज्ञान

कभी न भूल सकता तेरा अवदान
तूने ही तो पूरा किया मेरा अरमान

करती दिनभर नि: शुल्क श्रमदान
तुझसे रौशन होता पूरा खानदान

ईश्वर से तो मैं क्या दूनिया अनजान
पर मेरी दृष्टि में, माँ तू ही भगवान

तुझसे ही तो जग में मेरी पहचान
तू ही मेरा अतीत भविष्य वर्तमान

माँ से अधिक जग में न कोई महान
शब्द कम पड़े, कैसे करूं यशगान

तू जन्मदात्री, पालनकर्तृ, धैर्यवान
माँ ! ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान

✍ डॉ. आलोक रंजन कुमार

01/08/2024
Principal
A.K.Singh College
Japla, Palamau

माँ ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान है!

बात उन दिनों की है, जब मैं स्नातक में अध्ययन कर रहा था । अपने पैतृक स्थान से लगभग 81 किलोमीटर दूर पर अवस्थित जीएलए कॉलेज मेदिनीनगर में मैं अध्यनरत था। कॉलेज में रविवार को अवकाश होने के कारण प्रायः सप्ताह में शनिवार को शाम वाली रेलगाड़ी से घर पर आ जाया करता था ।

एक बार की बात है कि मैं शुक्रवार को ही घर पर आने वाला था। मां, पिताजी से बोली कि आज बेटा घर आ जाएगा । इसपर पिताजी ने कहा - उसकी छुट्टी रविवार को होती है, इसलिए वह शनिवार को ही आएगा, आज कैसे आ सकता है, भला ! इस पर मां ने कहा - मेरी आत्मा कह रही है कि बेटा आज अवश्य आएगा। क्योंकि उन दिनों मोबाइल फोन का जमाना नहीं था लेकिन घर पर लैंडलाइन फोन लगा हुआ था लेकिन मैंने फोन नहीं किया, सोचा कि घर पर पहुंच कर सरप्राइज दूंगा । लेकिन यहां तो मां की आत्मा जान चुकी थी कि मैं घर पर आ रहा हूं । जब मैं घर की गली में पहुंचा तो देखा कि दरवाजा खुला हुआ है मैंने सोचा कोई बात है क्या ? दूर से ही मेरा घर का खुला दरवाजा दिखाई पड़ रहा था, बार-बार मन विचलित हो रहा था । कभी सोचा कि कहीं पिताजी की तबीयत तो नहीं खराब है आदि आदि। यही सब सोता हुआ घर के दरवाजे तक पहुंचा । परंतु ; यहां तो मां मेरे आगमन प्रतीक्षा में बैठी हुई थी। मैं यह सोचकर चकित हो गया कि मां को कैसे पता चला कि मैं आज ही घर पर आ रहा हूं । वह झट से चौकी पर से उठी और मुझे गले लगा लिया । मैंने मां - पिताजी के चरण स्पर्श कर प्रणाम किया। तब पिताजी ने कहा तुम मां बेटों का हृदय से हृदय का मिलन है। पता नहीं तुम्हारी मां को तुम्हारे आने का अहसास कैसे हो जाता है? आज तुम्हारे आने से पहले ही मुझसे कह रही थी कि आलोक आज ही आने वाला है। सचमुच मां मां होती है ! मां ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान है!

डॉ. आलोक रंजन कुमार

Principal
A.K.Singh College
Japla, Palamau

ISSN No. 2347-2944 (Print)
e-ISSN No. 2582-2454 (Online)
RNI REG. : UPBIL/2014/66218
I2OR Impact Factor: 6.500

ASVP ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA

An International peer reviewed, open approach referred multi-disciplinary research journal

ARYAVART SHODH VIKAS SANSTHAN
ASVS
INTERNATIONAL Journal
BALLIA
(UTTAR PRADESH) INDIA
2013

I2OR

Indexing By:
Indexing No.: 5900
International Institute of Organized Research (I2OR)
(An Organized Research Platform)
Melbourne, Australia

DR. RAJEEV KUMAR SRIVASTAVA
Managing Director/Chief Editor/Publisher

Vol.-13, No.- II, Issues-XVII, YEAR- Sept.-2020
www.aryavartsvs.org.in

I2OR Publication Excellence Award 2018
I2OR Excellence International Journal Award 2019

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

ASVP

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA

(UGC Peer Reviewed Journal)

Chief Patron :
Prof. Kalplata Pandey
Vice Chancellor, Jannayak Chandra Shekhar University, Ballia (U.P.) India

Patron:
Prof. Manvendra Pratap Singh
HOD- Sociology, Deen Dayal Upadhyay Gorakhpur University, Gorakhpur (U.P.) India

President:
DR. Ram Naresh Yadav
Asso. Prof., Deptt. Of Sociology, S.M.M.T. P.G. College, Ballia, (U.P.) India

Managing Director/Chief Editor/Publisher
DR. Rajeev Kumar Srivastava
Asst. Prof. Deptt. Of Sociology, Shri Sudrisht Baba P.G. College, RaniGanj, Ballia, (U.P.) India.
Aryavart Shodh Vikas Sansthan, Ballia, (U.P.) India.

Managing Editor:
Prof. Pradeep Kumar Sharma.
Registrar, Post Graduate and Research Institute. Dakhsin Bharat Hindi Prachar Sabha,
Tyagrai Nagar, Chennai (Tamilnadu) India.

Guest Editor :
Prof. Hu Rui
Asso. Prof. Deptt. Of Hindi, Vice- Dean, Faculty of Foreign Studies, Guangdong Univerdty of Foreign Studies, China
Associate Editor :
DR. Vivek Mani Tripathi
Asst. Prof. (Indology), Faculty of Afro-Asian Languages and cultures,
Guangdong University of Foreign Studies, Guangzhou, Guangdong- China

Guest Editor:
Prof. (DR.) A.R. Khan
Dean- Faculty of Education B R A Bihar University, Muzaffarpur (Bihar) India
Prof. Sarfaraj Ahamad
Ex. HOD- Deptt. of Sociology, Patna University, Patna (Bihar) India
Prof. Mohd. Sarmad Jamal
Principal- Magadh College of Education, Gaya (Bihar) India
Co-ordinating Editor:
DR. Dilip Srivastava
Dean- Art & Law Faculty, Principal, S.M.M.T.D. College, Ballia (U.P.) India
DR. Sudha Trivedi
HOD- Deptt. of Hindi, MOP Women's College, Nugabankam, Chennai (Tamilnadu) India.
Technical Editor:
ShashiKant Tripathi
Deptt. Food Science and Technology, BBAU Central University Vidya , Vihar Colony, Locknow
Mrintujay Kumar Pandey
Deptt. Food Science and Technology, BBAU Central University Vidya , Vihar Colony, Locknow
Treasurer / Section Editor (Art and Huminities / Education):
Archana Srivastava, Aryavart Shodh Vikas Sansthan, & Aryavart Shodh Vikas Patrika Ballia (U.P.) India.

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

41. भारत में भ्रष्टाचार 138–140
–चन्दन कुमार सिंह, **बोध गया (बिहार)**
42. उच्च शिक्षित महिलाओं में रोजगार की आकांक्षा 141–145
–पुनम कुमारी, **बोध गया (बिहार)**
43. युवा वर्ग एवं ग्रामीण अपराध 146–147
–अनिता कुमारी, **नालंदा (बिहार)**
44. कर्म के सिद्धान्त का महत्त्व 148–151
–जितेन्द्र गोपाल, **जहानाबाद (बिहार)**
45. जनसंख्या वृद्धि आर्थिक विकास की अवरोधक 152–153
–कौशलेन्द्र कुमार सिंह, **बोध गया (बिहार)**
46. ग्रामीण मनोरंजन पर आधुनिकीकरण का प्रभाव 154–155
–निवेदिता कुमारी, **बोध गया (बिहार)**
47. थारू समाज में आधुनिक परिवर्तन 156–158
–सुदर्शन कुमार, **पटना (बिहार)**
48. दलित मानवाधिकार एवं कानून की वास्तविकता (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन) 159–161
–प्रमोद कुमार, **गया (बिहार)**
49. ग्रामीण विकास एवं राष्ट्रीय ग्रामीण कार्यक्रम 162–164
–दिलीप कुमार, **पटना (बिहार)**
50. बहुमुखी प्रतिभा के धनी महामना पं0 मदन मोहन मालवीय (एक समाज वैज्ञानिक अध्ययन) 165–169
–महेश कुमार पाण्डेय, **प्रतापगढ़ (उ0प्र0)**
51. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे महामारी कारण एवं निवारण 170–171
–राजीव कुमार श्रीवास्तव, **बलिया (उ0प्र0)**
52. वर्णाश्रम व्यवस्था में भक्ति भावना 172–175
–गीतांजली कुमारी, **जहानाबाद (बिहार)**
53. जनसंख्या और विकास 176–179
–कौशलेन्द्र कुमार सिंह, **बोध गया (बिहार)**
54. "ब्रिटिशकालीन ग्रामीण आर्थिक व्यवस्था" 180–181
–सत्येन्द्र कुमार, **मसौढ़ी (बिहार)**
55. गांधी का कर्मवाद 182–183
–मीना कुमारी, **धनबाद (झारखण्ड)**
56. आव्रजन तथा सामाजिक गतिशीलता का स्वरूप (बोधगया के संदर्भ में एक अध्ययन) 184–186
–चन्द्रकांति देवी, **पटना (बिहार)**
57. पिछड़ी जाति कि शिक्षित महिलाओं एवं अशिक्षित महिलाएँ तथा विवाह सम्बन्धी निर्णय 187–189
–सविता गुप्ता, **दाउदनगर (बिहार)**
58. विकास खण्ड पवई (जनपद आजमगढ़) में परिवहन एवं संचार सुविधाओं का विवरण 190–191
–ममता सिंह, **सुल्तानपुर (उ0प्र0)**
59. दलित आन्दोलन की प्रकृति 192–195
–नीलम कुमारी, **बोध गया (बिहार)**
60. नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में चित्रित पारिवारिक समस्याएं 196–199
–विद्या वर्मा, **प्रतापगढ़ (उ0प्र0)**

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 138-140
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept.-2020

भारत में भ्रष्टाचार

चन्दन कुमार सिंह
शोध अध्येता– समाजशास्त्र, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया (बिहार), भारत

Received- 10.08.2020, Revised- 14.08.2020, Accepted - 19.08.2020 E-mail: - dr.ramanyadav@gmail.com

सारांश : राष्ट्रमंडल खेल घोटाला, आदर्श सोसायटी घोटाला, 2जी स्पेक्ट्रम घोटाला और अब ताजा हाउसिंग लोन घोटाला । आलम यह है कि जाँच एजेंसियाँ जब तक किसी घोटाले की तह तक पहुँचती है, दूसरा घोटाला सामने आ जाता है । क्या साहब, क्या बंदे सभी भ्रष्टाचार के आगोश में समा चुके हैं । सुविधाभोगी होते समाज को भ्रष्टाचार का अजगर निगल रहा है । यह असाध्य रोग अब हमारे देश के आर्थिक महाशक्ति बनने में भी बड़ा अवरोध साबित हो रहा है । इससे हर साल अर्थव्यवस्था को करोड़ों रूपये की चपत लगती है । सेना, न्यायपालिका और खुफिया जैसे अपेक्षाकृत साफ–सुथरे और दाग रहित संस्थानों में भी भ्रष्टाचार की नई प्रवृत्ति ने आम आदमी को अवाक किया है । भ्रष्टाचार दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है ।

कुंजीभूत शब्द– राष्ट्रमंडल, घोटाला, एजेंसियाँ, भ्रष्टाचार, आगोश, सुविधाभोगी, असाध्य, आर्थिक, महाशक्ति।

जड़ों का जमाव– आजादी के बाद देश में 1950–90 के बीच समाजवाद से प्रेरित नीतियाँ लागू की गई। इसके तहत अर्थव्यवस्था को मजबूती से नियंत्रण में रखा गया। संरक्षणवाद और सार्वजनिक इकाईयों को पोषित किया गया। लिहाजा लाइसेंस राज का उदय हुआ। जिससे आर्थिक वृद्धि मंद पड़ी और भ्रष्टाचार का बोलबारा बढ़ा।

अफसरशाही– ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल के अनुसार देश के 50 प्रतिशत से अधिक लोों को सरकारी दफ्तरों में अपना काम कराने के लिए रिश्वत देना या प्रभाव का इस्तेमाल करना पड़ता है ।

हर साल देश के ट्रक वाले करीब 250 अरब रूपये की घूस देते हैं ।

2009 में किए गए एक सर्वे के मुताबिक देश में अफसरशाही की कार्य कुशलता का स्तर एशिया की दिग्गज अर्थव्यवस्थाओं वाले देशों मसलन सिंगापुर, दक्षिण कोरिया, जापान, चीन और इंडोनेशिया की तुलना में दोयम दर्जे का है ।

भूमि और संपत्ति– अधिकारी राज्य की संपत्ति को ही चुरा लेते है । बिहार में 80 प्रतिशत से भी ज्यादा रियायती दरों पर गरीबों को दी जाने वाली खाद्य सहायता चुरा ली जाती है ।

पूरे देश में पनप चुका भूमाफिया राजनीतिज्ञों, अफसरों, बिल्डरों की मदद से अवैध तरीके से भूमि का अधिग्रहण कर उसको गैरकानूनी ढंग से बेच देता है ।

1990 के बाद के चर्चित घोटाले

- बोफोर्स घोटाला (1990)
- पशुपालन घोटाला (1990)
- हवाला घोटाला (1993)
- हर्षद मेहता घोटाला (1995)
- दूरसंचार घोटाला (1996)
- चारा घोटाला (1996)
- केतन पारेख स्कैंडल (2001)
- बराक मिसाइल डील स्कैंडल (2001)
- तहलका स्कैंडल (2001)
- ताज कोरीडोर केस (2002–2003)
- तेलगी घोटाला (2003)
- तेल के बदले अनाज घोटाला (2005)
- कैश फॉर वोट स्कैंडल
- सत्यम घोटाला
- काले धन को सफेद करना (मधु कोड़ा–4,000 करोड़ रूपये)
- आदर्श सोसायटी घोटाला
- राष्ट्रमंडल खेल घोटाला

टेंडर और कांट्रैक्ट प्रक्रिया– नीलामी प्रक्रिया में पारदर्शिता का घोर अभाव है । सरकारी अधिकारी बोली लगाने में अपने चहेते चुनिंदा लोगों के हक में टेंडर जारी कर देते हैं सरकार द्वारा सड़क निर्माण कार्य में तो कंस्ट्रक्शन माफिया का बोलबाला है ।

स्वास्थ्य– सरकारी अस्पतालों में भ्रष्टाचार दवाओं की गैर मौजूदगी, मरीज को भर्ती करने की जिद्दोजिहद, डॉक्टरों की अनुपलब्धता से जुड़ा है ।

न्यायपालिका– ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल के मुताबिक मुकदमों के निपटारे में होने वाली देरी, जटिल न्यायिक प्रक्रिया और जजों की कमी के कारण न्यायिक तंत्र में

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

RNI TITLED No.: UPBIL 04292
Society REG. No.: AZM 561/2013-14

ARYAVART SHOD[H] VIKAS PATRIKA

1.	of Publication	: B a (U.P.)
2.	icity of its Publication	: Annual
3.	Pr Name	: Ravi Offset
	Add	: Dwarikapuri (Near Roadways), Ballia (U.P.)
4.	Publis s Name	: DR. Rajeev Kumar Srivastava
	Nationality	: Indian
	Address	: Harpur Nai Basti, Ballia (U.P.)
5.	Editor's Name	: DR. Rajeev Kumar Srivastava
	Nationality	: Indian
	Address	: Harpur Nai Basti, Ballia (U.P.)
6.	Name of the Owner	: DR. Rajeev Kumar Srivastava
	Address	: Harpur Nai Basti, Ballia (U.P.)

- Social And All Thoughts Development
- Research Development
- Linkages Between Social And Physical Science
- Exchange Of Ideas Between Development Professionals
- Planers And Policy Makers
- Protect Evironment And Develop In Rural Ares

Published by:
ARYAVART SHODH VIKAS SANSTHAN
HARPUR NAI BASTI
DISTRICT-BALLIA-277001, UTTAR PRADESH INDIA
REG. NO.: 561/2013-14

REG. No.: AZM 561/2013-14

Price 1650/-

Contact/Follow us on :
E-mail : aaryvart2013@gmail.com,
editor.board2013@gmail.com
Cell. +91-96 16 423 071
//aryavart shodh vikash patrika
@aryavart shodh vikash patrika
YouTube the aryavart shodh vikash patrika

ASVS

डॉ0 राजीव कुमार श्रीवास्तव, एम0फिल0, पी-एच0डी0, स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा रवि ऑफ सेट, द्वारिकापुरी नियर रोडवेज, बलिया-277001 उत्तर प्रदेश से मुद्रित तथा कार्यालय, हरपुर नई बस्ती, बलिया-277001(उ0प्र0) से प्रकाशित एवं प्रसारित। सम्पादक- डॉ0 राजीव कुमार श्रीवास्तव,
Sub Printers: Neha Printers Offset, Ballia (U.P.)

Reg. No.: V27452

ISSN 0974 7222

PARISHEELAN

International Multidisciplinary Peer Reviewed Quarterly Research Journal

U.G.C. Sr.No.-19365 U.G.C.Journal No.-40790

Vol-XV No.-1 Jan.-March, 2019

Part-2

Chief Editor
Dr. Anjani Kumar Mishra

Editors
Dr. Archna Dubey
Dr. Sanjay Kumar
Dr. Preetesh Acharya

Published by
SURUCHI KALA SAMITI, VARANASI
Approved by U.G.C., New Delhi

Annual Membership
For Institutions : Rs.2000
For Individuals : Rs.1500
For Issue Price : Rs.800
Life Membership
For Institutions : Rs. 10,000
For Individuals : Rs. 8,000
For Any Information, Please Contact
Editor
PARISHEELAN
Mob. : +91-9450016201
Landline No. 0542-2310854
e-mail : suruchikalas@yahoo.in
Journalwh@gmail.com
www.skspvns.com

Reg. No. V-27452

ISSN 0974 7222

PARISHEELAN

International Multidisciplinary Peer Reviewed Quarterly Research Journal

UGC Sr. No.-19365

Journal No.-40790

Vol-XV No.-1 Jan.March-2019

Part-2

Editor in Chief
Dr. Anjani Kumar Mishra

Editors
Dr. Archna Dubey
Dr. Sanjay Kumar
Dr. Preetesh Acharya

Published by
SURUCHI KALA SAMITI, VARANASI
Approved by U.G.C., New Delhi
Website-www.skspvns.com
Ph.No. 0542-2310854 Mob.-9450016201

भारत की विदेश–नीति (Foreign Policy Of India) 227-232
डॉ0 रत्नेश रंजन

आव्रजन तथा सामाजिक गतिशीलता की बाधायें 233-236
डॉ. चन्द्रकांति देवी

अनुसूचित जाति की शिक्षित महिलाएँ एवं धार्मिक रितियाँ 237-240
मनीष कुमार

"उच्च शिक्षित महिलाओं की परिवर्तित प्रस्थिति एवं जीवन शैली" 241-244
पुनम कुमारी

भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में जनजातीय विद्रोह : एक अध्ययन 245- 250
सरोज शालिनी

थारू समाज एक परिचय (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन) 251-254
डॉ0 सुदर्शन कुमार

ग्रामीण समाज में आधुनिकीकरण 255-258
डॉ0 विनय पासवान

"भ्रष्टाचार और बाल मजदूरी"(एक समाजशास्त्रीय अध्ययन) 259-262
चन्दन कुमार सिंह

"मलिन बस्ती की युवा महिलाएँ एवं अपराध" (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन) 263-270
डॉ0 अनिता कुमारी

"रामचरित मानस में हनुमान तथा शबरी की भक्ति भावना" 271-274
डॉ0 गीतांजली कुमारी

"आय के स्त्रोतों के संदर्भ में कौटिल्य के विचार का विशलेषण" 275-278
डॉ0 जितेन्द्र गोपाल

"शिक्षा एवं जनसंख्या नियंत्रण" 279-282
डॉ0 कुसुम कुमारी

"सामंतवाद एवं दलितों का दमन" 283-288
डॉ0 प्रमोद कुमार

"डिहरी–डालमिया नगर शहर का पारिवारिक संरचना" 289-292
डॉ0 संजय कुमार

कृषि श्रमिक : समस्याएँ एवं निदान 293-296
डॉ0 शांति कुमारी

कबीर का दर्शन 297-302
दिनेश कुमार उपाध्याय

कुषाणकालीन कला की विशेषताएँ 303-308
अशोक कुमार 'अमर'

नारी और वैराग्य : एक ऐतिहासिक विश्लेषण 309-314
डॉ0 पुष्पा कुमारी

बिहार में प्रादेशिक कृषि नियोजन–एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 315-320
डॉ0 बीरेन्द्र कुमार यादव

HPLC analysis of aminoacids in the Mercury and Cadmium treated gill, liver and muscles in clarias batrachus 321-328
Sanjeeta Bishwas

गर्भावस्था में घरेलू हिंसा 329-332
मधु कुमारी

दूरदर्शन का सामाजिक जीवन पर प्रभाव का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण 333-338
मीना कुमारी

भारतीय अर्थव्यवस्था में विमुद्रीकरण का प्रभाव (ग्रामीण विकाश के विशेष संदर्भ में) 339-344
डॉ0 राजा साहु

भारत में महिला सशक्तिकरण–एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 345-350
मो0 इमरान आलम

बौद्धकालीन शासन–व्यवस्था : एक संक्षिप्त अवलोकन 351-354
डॉ0 रेणु बाला

महात्मा गाँधी के सविनय अवज्ञा आंदोलन में बिहार के सेनानियों की भूमिका : एक अध्ययन 355-360
डॉ0 किरण कुमारी

"भ्रष्टाचार और बाल मजदूरी"
(एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

चन्दन कुमार सिंह*

भारत की गिनती दुनिया के उन देशों में होती है, जहां भ्रष्टाचार का बोलबाला दुनिया के हर क्षेत्र में दिखाई देता है। देश में भ्रष्टाचार पर नियत्रंण एवं निगरानी हेतु सी.बी.आई. सतर्कता आयोग, पुलिस आर्थिक अपराध शाखा, राज्यों में भ्रष्टाचार निरोधक एजेंसियां एवं अनेक क्षेत्र कार्यरत है, बावजूद इसके कि भ्रष्टाचार निरंतर फैलता जा रहा है। बेनामी और अवैध तरीकों से संपत्ति एवं धन को देश में गुप्त रूप से रहना या फिर विदेशों में सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया जा रहा हैं। राजनीतियों, उद्योगपतियों और माफियाओं द्वारा काले धन की धाराएं स्विटजरलैंड के बैंक में इस तरह मिलती हैं जैसे नदियाँ समुद्र में जाकर मिलती हैं। यह काला धन ताकतवर लोगों का होना इसलिए उसका खुलासा करना आवश्यक नहीं होता। भ्रष्टाचार और काले धन की बहस राजनीतिगत एवं संस्थागत तक सीमित रही, इसके विभिन्न स्रोतों, कारणों और आयामों को इतनी अहमियत नहीं है। बालश्रम के कानूनी, आर्थिक, राजनीतिक और मानवीय पहलू है परंतु इसका महत्वपूर्ण पहलू बाल मजदूरी हैं यह भ्रष्टाचार का महत्वपूर्ण आयाम है। प्रस्तुत शोध लेख भ्रष्टाचार और बाल मजदूरी विषय पर है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य–

1. शोध का उद्देश्य स्वतंत्रता पश्चात भ्रष्टाचार के भयावह रूप को जानना है।
2. बालश्रम से कैसे भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है, इसे जानना है।

शोध के स्रोत–भारत स्वतंत्रता पश्चात से विभिन्न वर्षों के द्वितीयक स्रोतों को एकत्र करना।

शोध प्राविधि–द्वितीय स्रोतों के आधार पर अंकगणितीय माध्य रीति का उपयोग करके विश्लेषण किया गया है।

शोध विश्लेषण–भारत सहित कई राष्ट्रों में आगे हुए आर्थिक सुधारों ने आकर्षक GDP वृद्धि ने भ्रष्टाचार को बढ़ाने का काम किया है। इससे कई देशों में भारी भरकम राजस्व से हाथ धोना पड़ा दूसरी ओर आर्थिक विषमता की समस्या अधिक गंभीर हो गई जिसे भारत के उदाहरण से समझा जा सकता है। भारत ने 1948 से 2008 के बीच 213 अरब डालर गवाएं। इनमें से 104 अरब डालर का काला

*शोध छात्र (समाजशास्त्र) मगध विश्वविद्यालय, बोध गया

महापंडित राहुल सांकृत्यायन की विचार-यात्रा

सनातनी से साम्यवादी

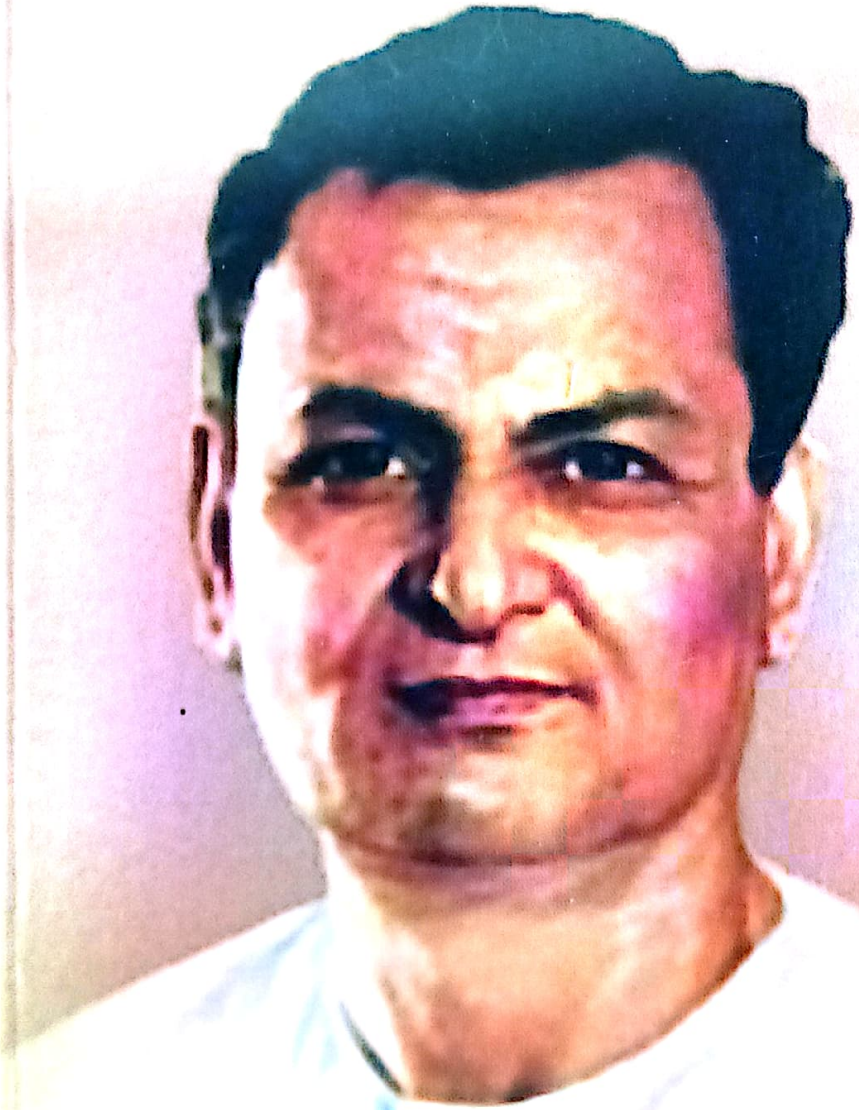

डॉ. राम सुभग सिंह

महापंडित राहुल सांकृत्यायन की विचार-यात्रा

सनातनी से साम्यवादी

डॉ. राम सुभग सिंह

सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर

ISBN : 978-93-92252-79-2

© डॉ. राम सुभग सिंह

प्रकाशक
सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर
प्रधान कार्यालय : दाऊजी रोड (नेहरू रोड) बीकानेर (राजस्थान)
शाखा कार्यालय : ए-1, जवाहर नगर, बीकानेर (राजस्थान)
वेबसाइट : www.suryaprakashanmandir.com
ई-मेल : suryaprakashbooks@gmail.com
सम्पर्क : 9829280717

मूल्य : ₹300

पहला संस्करण : 2023

मुद्रक : सत्यम् शिवम् सुन्दरम्, बीकानेर (राजस्थान)

MAHAPANDIT RAHUL SANKRITYAYAN KI VICHAR YATRA
Sanatani se samyavadi
by Dr. Ram Subhag Singh

अनुक्रम

प्राक्कथन 9

अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा 15

1. सनातनी राहुल 19

2. सनातनी से आर्यसमाजी 25

सनातनी पाखंड के कड़वे अनुभव 30

वेदान्त और मीमांसा का गहन अध्ययन 33

स्वतंत्रता आंदोलन में प्रवेश 35

सांप्रदायिकता से सामना 37

3. आर्य समाज से बौद्ध धर्म में प्रयाण 39

4. बौद्ध धर्म से साम्यवाद की शरण में 47

ईश्वर, मनुष्य का मानस-पुत्र है 52

आत्मा और पुनर्जन्म : दिव्य अज्ञान 55
भय-भ्रम ही भूत-प्रेत 60
ज्योतिष का जाल 61
योग का मायालोक 63
ध्यान का धंधा 68
समाधि : खंड-मृत्यु 72
दिव्यशक्ति और चमत्कार की भूलभुलैया 76

5. साम्यवादी राहुल 85

संदर्भ सूची 106

महात्मा गांधी

वैचारिकी एवं सिद्धांत

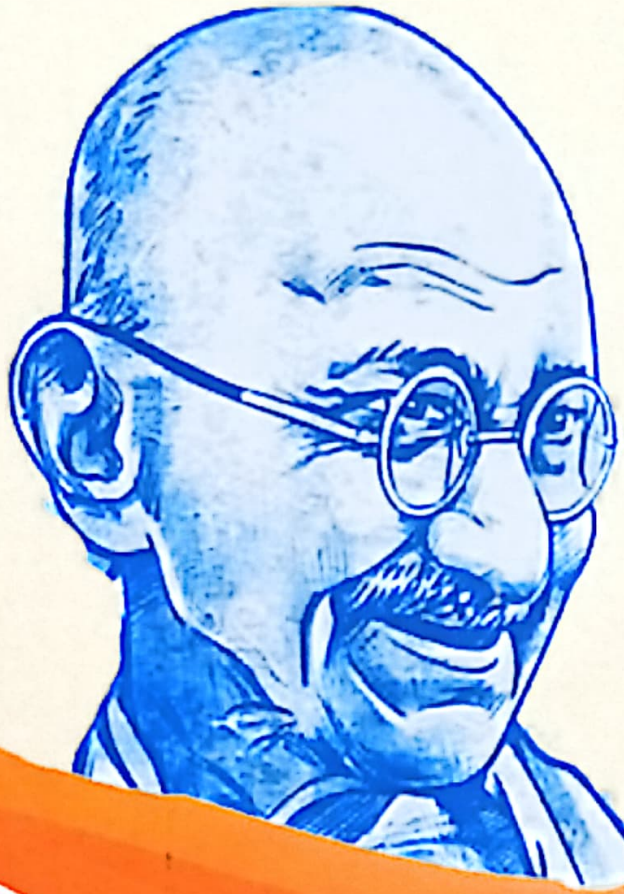

सम्पादक

डॉ. सरस्वती कुमारी

डॉ. सरिता रानी

डॉ. विवेक कुमार पाण्डेय

लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक को पूरी तरह अथवा आंशिक तौर पर या पुस्तक के किसी भी अंश की फ़ोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा इलेक्ट्रॉनिक अथवा ज्ञान के किसी भी माध्यम से संग्रह व पुनः प्रयोग की किसी भी प्रणाली द्वारा इस पुस्तक का कोई भी अंश प्रेषित, प्रस्तुत अथवा पुनरुत्पादित ना किया जाए। प्रस्तुत पुस्तक में लेखकों के अपने विचार हैं, जिनसे प्रकाशक की सहमति अनिवार्य नहीं हैं।

Mahatma Gandhi : Vaichariki Evam Sidhant

Compilled by

Dr. Saraswati Kumari / Dr. Sarita Rani / Dr. Vivek Kumar Pandey

I.S.B.N. : 978-81-8135-166-1

© सम्पादन मंडल

मूल्य : 220.00

प्रथम संस्करण : 2021

प्रकाशक : पंकज बुक्स

109-ए, पटपड़गंज गाँव, दिल्ली-110091

दूरभाष : 8800139684, 9312869947

आवरण : नीरज

शब्द संयोजक : पंकज ग्रॉफिक्स, दिल्ली-110092

मुद्रक : राधा ऑफसेट, दिलशाद गॉर्डन, दिल्ली।

Published by : Pankaj Books,

109-A , Patparganj Village, Delhi-110091, INDIA

E-mail : bhavnaprakashan@gmail.com

अनुक्रम

1. 'स्त्री-पुरुष समान हैं पर एक नहीं' महात्मा गांधी
-प्रो. सुमन जैन : 09

2. ग्राम स्वराज व पंचायती राज की दिशा
-डॉ. सीमा तिवारी : 19

3. गांधी जी की सर्वोदय की अवधारणा
-डॉ. पवन पाठक : 29

4. गॉधी चिन्तन में सत्याग्रह की भूमिका: एक विमर्श
-डॉ. क्षमा तिवारी : 33

5. महात्मा गांधी एवं भारतीय शिक्षा
-डॉ. शैलेन्द्र कुमार : 40

6. महात्मा गांधी की दृष्टि में भगवद्गीता के वैशिष्ट्य का दार्शनिक अवलोकन
-डॉ. नन्दिनी सिंह : 45

7. महात्मा गांधी के दर्शन-चिंतन में मानवतावाद
- डॉ. दीपंजय श्रीवास्तव : 52

8. सर्वोदयकारी मूल्य-दर्शन
-डॉ. विवेक कुमार पाण्डेय : 57

9. वैश्वीकरण और गाँधी
-डॉ. रीता जायसवाल : 65

10. गांधीजी बनाम भगतसिंह; भारत के मुक्ति संग्राम में विचारधारा का संघर्ष
-डॉ. राम सुभग सिंह : 73

11. प्रेरणास्पद माँ
-डॉ. अनुराधा सिंह : 83

गांधीजी बनाम भगतसिंह

(भारत के मुक्ति संग्राम में विचारधारा का संघर्ष)

डॉ. राम सुभग सिंह

इंग्लैंड की ईस्ट इंडिया कंपनी व्यापार के नाम पर भारत में घुसी और फिर यहां के सामाजिक भेदभाव एवं राजनीतिक-प्रशासनिक खामियों का फायदा उठाकर भारत की राजनीतिक सत्ता पर भी कब्जा कर लिया। सन् 1757 की पलासी की लड़ाई में अंग्रेजों ने अंतिम रूप से अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया। लेकिन, अंग्रेजों के दमन-शोषण के विरुद्ध 100 वर्ष बाद 1857 ई. में भारतीय जनता ने स्वतंत्रता संग्राम छेड़ा, जिसे बल प्रयोग से दबा दिया गया।

इसके बाद 1885 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन किया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य था-भारतीय जनता के हित की दुहाई देकर अंग्रेजों से रियायत माँगना। 1905 ई. में बंगाल विभाजन के बाद भारत की जनता फिर से उद्वेलित हो गई और अंग्रेजों के खिलाफ उठ खड़ी हुई। बंगाल विभाजन रद्द किये जाने के बाद ही जनता का गुस्सा कुछ शांत हुआ। लेकिन तब तक देश की जनता अंग्रेजों की शोषण नीति को समझ चुकी थी। 1914 ई. में प्रथम विश्व युद्ध छिड़ जाने और अंग्रेजों की स्थिति कमजोर हो जाने पर 1916 ई. में होम रूल की मांग की गई।

1915 ई. में दक्षिण अफ्रीका से भारत में गांधीजी का पदार्पण हो चुका था। 1917 ई. में चंपारण में अंग्रेजों द्वारा नील की खेती करनेवालों के भयंकर शोषण के खिलाफ गांधीजी ने सफल आंदोलन चलाया और राष्ट्रीय पटल पर छा गये। 1919 ई. में जालियांवाला बाग हत्याकांड के बाद अंग्रेजों के खिलाफ देशव्यापी गुस्सा फूट पड़ा और 1920 ई. में गांधीजी ने अंग्रजी सरकार के खिलाफ असहयोग आंदोलन शुरू कर दिया और सालभर में अंग्रेजी सरकार को उखाड़ फेंकने का आश्वासन देश को दिया। पूरा देश गांधीजी के साथ खड़ा हो गया और अंग्रेजी सत्ता हिलने लगी। तभी 1922 ई. में चौरीचौरा कांड हुआ, जिसमें 22 पुलिस वाले आग के हवाले कर दिये गये और हिंसक आंदोलन का नेतृत्व कर पाने में अक्षम गांधी ने आंदोलन स्थगित कर दिया।

यहीं से भारतीय राजनीति में एक नया मोड़ आया। पूरा देश निराशा के गर्त में चला गया और गांधीजी के नेतृत्व एवं इनके अहिंसा के सिद्धांत से लोगों का विश्वास उठ गया। परिणाम यह हुआ कि राष्ट्रीय भावना का स्थान सामुदायिक स्वार्थ ने ले लिया और

आज़ादी का अमृत महोत्सव

कोल्हान विश्वविद्यालय चाईबासा

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

गाँधी दर्शन, शिक्षा एवं संस्कृति

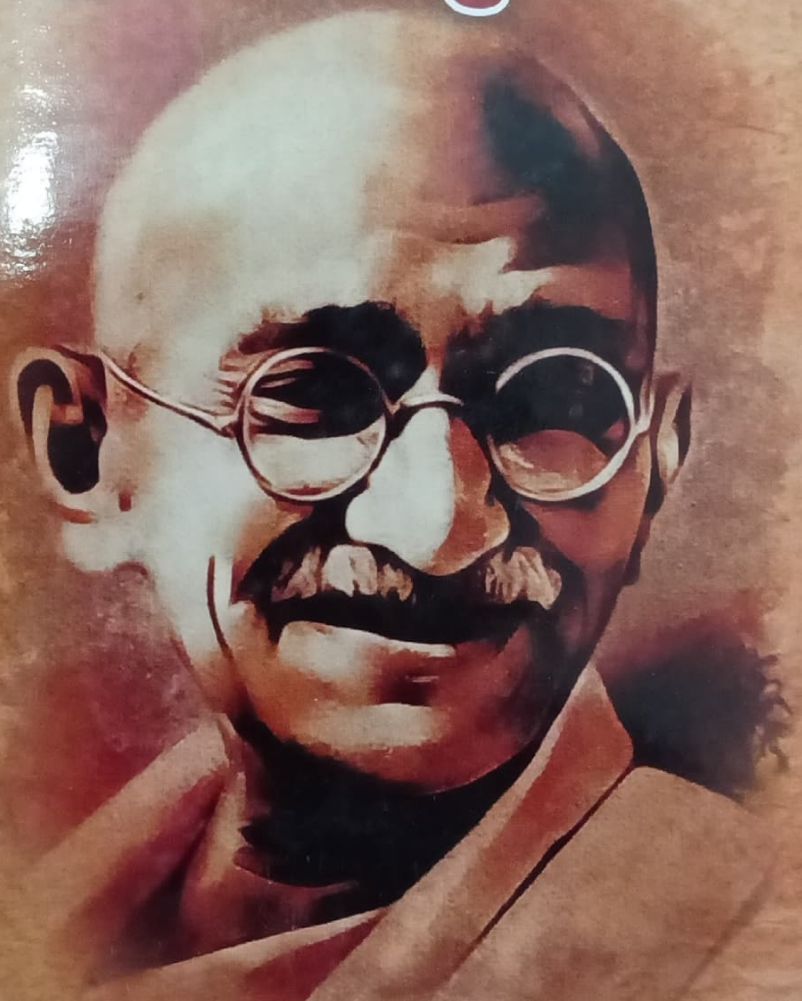

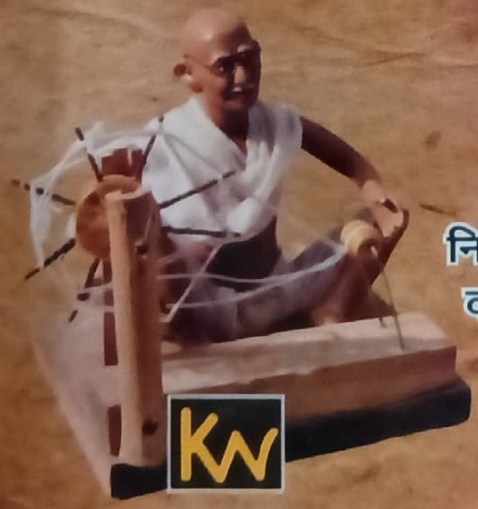

प्रधान संपादक

डॉ0 दीपंजय श्रीवास्तव

अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग

निदेशक, योग और प्राकृतिक चिकित्सा विभाग

कोल्हान विश्वविद्यालय, चाईबासा, झारखण्ड

KW

* प्रकाशित रचनाओं में निहित विचार लेखकों के स्वयं हैं, जिनका प्रधान संपादक या संपादक मंडल से कोई संबंध नहीं है।
* साहित्यिक चौर्य (plagiarism) के किसी भी दावे की स्थिति में पूरी जवाबदेही पुस्तक में शामिल किये गये आलेख के लेखक की होगी।
* किसी भी विवाद के निपटारे का न्यायिक क्षेत्र जमशेदपुर होगा।

प्रधान संपादक : डॉ० दीपंजय श्रीवास्तव

प्रथम संस्करण : 2022 **ई०**

ISBN : **978-81-959162-0-7**

मूल्य : ₹ 750

© **कोल्हान विश्वविद्यालय, चाईबासा, झारखण्ड**

प्रकाशक :

Kishor Vidya Niketan

B-1301, Amarpali Green, Indirapuram,
Ghaziabad, U.P., Delhi/NCR 201014
email: kvnpublisher@gmail.com

मुद्रक

sjro
services & suppliers

रमेश बैस

राज भवन
रांची - ८३४००१
झारखंड

सत्यमेव जयते

राज्यपाल, झारखंड

संदेश

अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि कोल्हान विश्वविद्यालय, चाईबासा के स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र विभाग द्वारा आज़ादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य पर **"गाँधी दर्शन, शिक्षा एवं संस्कृति"** नामक पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी न केवल बीसवीं शताब्दी के युग पुरुष थे, अपितु आज भी समस्त मानवजाति के लिए प्रेरणास्रोत हैं। उन्होंने सम्पूर्ण मानवता को सत्य, अहिंसा व सत्याग्रह का मार्ग दिखाया और त्याग, आत्मसंयम एवं अनुशासित जीवन के शाश्वत मूल्यों को अपनाकर स्वयं के जीवन एवं व्यवहार में चरितार्थ भी किया। इसी कारण गाँधी जी के सत्य एवं अहिंसा के अमोघ अस्त्र द्वारा अंग्रेजों को परास्त होना पड़ा तथा भारत का एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उदय हुआ। गाँधी जी के विचारों, आदर्शों एवं मूल्यों को अपनाना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आशा करता हूँ कि यह पुस्तक सभी विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं जिज्ञासुओं का ज्ञानवर्धन कर उन्हें सही मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित करेगी तथा लोकोपयोगी होगी।

(रमेश बैस)

विषय-सूची

1.	गाँधी एवं अम्बेडकर के चिन्तन में वर्ण व्यवस्था : एक तुलनात्मक विवेचन	डॉ. द्वारका नाथ	1
2.	समत्त्व योग तथा गाँधी दर्शन	डॉ. काकोली बसाक	13
3.	Depiction of Gandhian Thought in ODIA Literature : with Special Reference to Poet Guru Prasad Mohanty	Dr. Harihar Padhan	26
4.	Gandhi and Spirituality	Dr. Manoj Kumar Mohapatra	30
5.	बाजारवाद के दौर में गाँधी की प्रासंगिकता	सुभाषचन्द्र गुप्त	34
6.	महात्मा गाँधी का राज्य संबंधी विचार	डॉ0 ज्योति कुमारी	42
7.	महात्मा गाँधी जी का विचार : दार्शनिक परिप्रेक्ष्य में	डॉ0 लक्ष्मी झा	47
8.	मूल्य संकट का वर्तमान परिप्रेक्ष्य और गाँधी की चेतन दृष्टि	डॉ. धर्मजंग	51
9.	गाँधी जी का सत्याग्रह : एक विमर्श	डॉ0 मनोज कुमार तिवारी	57
10.	महात्मा गाँधी (1869–1948) : एक पत्रकार के रूप में	डॉ0 इन्द्रसेन सिंह	72
11.	महात्मा गाँधी की दृष्टि में वर्ण व्यवस्था	डॉ0 आभा झा	77
12.	साध्य-साधन संबंधी विचार : गाँधी के संदर्भ में	अमृता कुमारी	85
13.	महात्मा गाँधी का ईश्वर–दर्शन	डॉ0 ममता गुप्ता	92
14.	महात्मा गाँधी का समाज दर्शन	डॉ0 फौजिया परवीन	99
15.	महात्मा गाँधी का धर्म–दर्शन	डॉ0 राम सुभग सिंह	108
16.	महात्मा गाँधी का शिक्षा–दर्शन एवं व्यक्तित्व विकास	डॉ0 अशोक कुमार सिंह	115
17.	महात्मा गाँधी का जगत–विचार	डॉ0 पंकज श्रीवास्तव	122
18.	वर्तमान संदर्भ में गाँधी शिक्षा दर्शन की उपादेयता	डॉ0 राज कुमार चौबे	125

महात्मा गाँधी का धर्म–दर्शन

डॉ0 राम सुभग सिंह*

महात्मा गाँधी जीवन–पर्यन्त राजनीति और समाज सेवा में सक्रिय रहे तथा अपने जीते–जी जुल्मी अंग्रेजी सरकार से भारत को आजाद कराकर ही दम लिया। पर राजनीति, गाँधीजी के लिए आपद्धर्म थी और धर्म स्वाभाविक वृत्ति। बाल्यकाल से ही गाँधीजी धर्मभीरू, ईश्वरभीरू और नीतिपरायण थे। अपने जन्मना हिन्दू धर्म में उनकी प्रगाढ़ आस्था थी। ईश्वर ही उनका प्राण था और रामनाम श्वास। हत्या के समय उनके मुख से अंतिम शब्द 'हे राम' ही निकला था।

किसी भी संगठित धर्म के दो मुख्य पक्ष होते हैं–ज्ञानकांड (दार्शनिक विचार), और कर्मकांड (विशेष प्रकार की जीवन–पद्धति एवं उपासना–पद्धति)। सामान्य जनता कर्मकांड को ही धर्म का पर्याय समझती है और इसी में उलझी रहती है। इसीलिए वह धर्मके मर्म को भी नहीं समझती; क्योंकि धर्म की आत्मा तो उसके दार्शनिक एवं नैतिक विचारों में होती है। इसी का स्थायी मूल्य व महत्त्व होता है। गाँधीजी अपने हिन्दू धर्म सहित तमाम धर्मों को अपूर्ण मानते हुए भी सत्य एवं पवित्र मानते हैं तथा अपने–अपने धर्म का परिवर्तन किये बगैर कालक्रम में आई विकृतियों को सुधारने की सलाह देते हैं। उन्हीं के शब्दों में "सारे धर्म सत्य को प्रकट करते हैं, परन्तु सभी अपूर्ण हैं और सबमें दोष हो सकते हैं।... परन्तु दोषों के कारण उसका त्याग नहीं करना चाहिए, बल्कि उन दोषों को मिटाने का प्रयत्न करना चाहिए। सभी धर्मों के प्रति समभाव से देखने पर हम दूसरे धर्मों के प्रत्येक स्वीकार करने योग्य तत्त्व का अपने धर्म में समन्वय करने में कभी संकोच नहीं रखेंगे, बल्कि ऐसा करना अपना धर्म समझेंगे।"[१]

गांधीजी की दृष्टि में जो धर्म है, वही अध्यात्म है और वही नीति भी। ऐसा कदापि नहीं हो सकता कि नीति का पालन किये बगैर कोई धार्मिक या आध्यात्मिक हो जाये। अपनी आत्मकथा (सत्य के साथ मेरे प्रयोग) की प्रस्तावना में वे लिखते हैं–'मेरे प्रयोगों में तो आध्यात्मिक का मतलब है नैतिक; धर्म का अर्थ है नीति; आत्मा की दृष्टि से पाली

*सहायक आचार्य, दर्शनशास्त्र विभाग, ए0 के0 सिंह कॉलेज, जपला पलामू, झारखण्ड–822116

गई नीति धर्म है।"[२] अन्यत्र वे कहते हैं–"नीति–मार्ग में नीति का पालन करके उसका प्रतिफल प्राप्त करने की बात आती ही नहीं। मनुष्य कोई भला काम करता है, तो शाबाशी पाने के लिए नहीं, बल्कि इसलिए कि भलाई किये बिना उससे रहा ही नहीं जाता।...जैसे इस लोक में लाभ के उद्देश्य से किया हुआ काम नीतियुक्त नहीं माना जा सकता, वैसे ही परलोक में लाभ मिलेगा; इस आशा से किया हुआ काम भी नीतिरहित है।"[३]

प्रचलित मान्यता है कि धर्म ही नीति का आधार है अर्थात् धर्म एवं धर्मग्रंथ ही हमें नीति का पाठ पढ़ाते हैं। जो भी व्यक्ति नास्तिक एवं धर्मनिरपेक्ष होगा, वह नैतिक नहीं हो सकता है। इस प्रचलित मान्यता के विपरीत गाँधीजी का मत है कि नीति ही धर्म का आधार है और नीति में ही धर्म का समावेश है। उनके शब्दों में, "दुनिया के धर्मों को बारीकी से देखा जाये, तो पता चलेगा कि नीति के बिना धर्म टिक नहीं सकता। सच्ची नीति में धर्म का समावेश अधिकांश में हो जाता है। रूस में ऐसे आदमी हैं, जो देश के भले के लिए अपना जीवन अर्पण कर देते हैं। ऐसे लोगों को नीतिमान् समझना चाहिए और सच्चे अर्थों में धार्मिक भी। जैसे नींव को खोद डालिए तो घर अपने आप ढह जायेगा। वैसे ही नीतिरूपी नींव टूट जाये, तो धर्मरूपी इमारत भी दो–चार दिन में भूमिसात हो जायेगी।"[४]

गाँधीजी के विचार में सत्य और अहिंसा ही वह कसौटी है, जो समस्त धर्मों का सार है तथा इसी आधार पर वे सभी धर्मों, उनके ग्रंथों एवं उनकी शिक्षाओं की परीक्षा करते हैं। जो शिक्षाएँ इस पर खरी उतरती हैं, वही गाँधीजी को उनका मूल स्वरूप मालूम पड़ती है; अन्यथा वे उसे कालक्रम की विकृति मानकर उसका परित्याग कर देते हैं। यही कारण है कि वे 'अस्पृश्यता' को वर्णाश्रम धर्म की मूल भावना के विपरीत तथा हिन्दू धर्म का कलंक मानते हैं और इस कलंक को मिटाना प्रत्येक हिन्दू का पुनीत कर्त्तव्य समझते हैं। गाँधीजी ने कहा है–"जितना संभव था, उतना विविध धर्मों का अध्ययन करने के बाद मैं इस निर्णय पर आया हूँ कि सभी धर्मों का एकीकरण करना यदि उचित और आवश्यक है, तो उन सबकी एक महाचाबी होनी चाहिए। यह चाबी सत्य और अहिंसा है।"[५]

गाँधीजी की दृष्टि में धर्म श्रद्धा एवं आस्था का विषय है, क्योंकि इसका विषय क्षेत्र अनुभव एवं बुद्धि की सीमा के परे है। पर ऐसा नहीं है कि वे धर्म के मामले में लकीर के फकीर थे और धर्मके नाम पर किसी भी सड़ी–गली बात का अंधानुकरण करते थे। जो भी बात उन्हें अन्तर्विरोधी और लोकहित के विरूद्ध प्रतीत होती थी, उसे या तो अस्वीकार कर देते थे या फिर उसकी नई व्याख्या कर लेते थे।

वैसे तो सभी धर्म परलोकोन्मुखी हैं, चाहे वे ईश्वरवादी हों या निरीश्वरवादी; और गाँधीजी भी हर कार्य ईश्वर, पाप–पुण्य एवं मोक्ष को ही ध्यान में रखकर करते हैं। पर जब बात तार्किक संगति एवं औचित्य की हो, तो गाँधीजी की वकील बुद्धि जाग्रत हो जाती

छायावादी काव्यों में राष्ट्रीयता की भावना

डॉ० शिव कुमार विश्वकर्मा

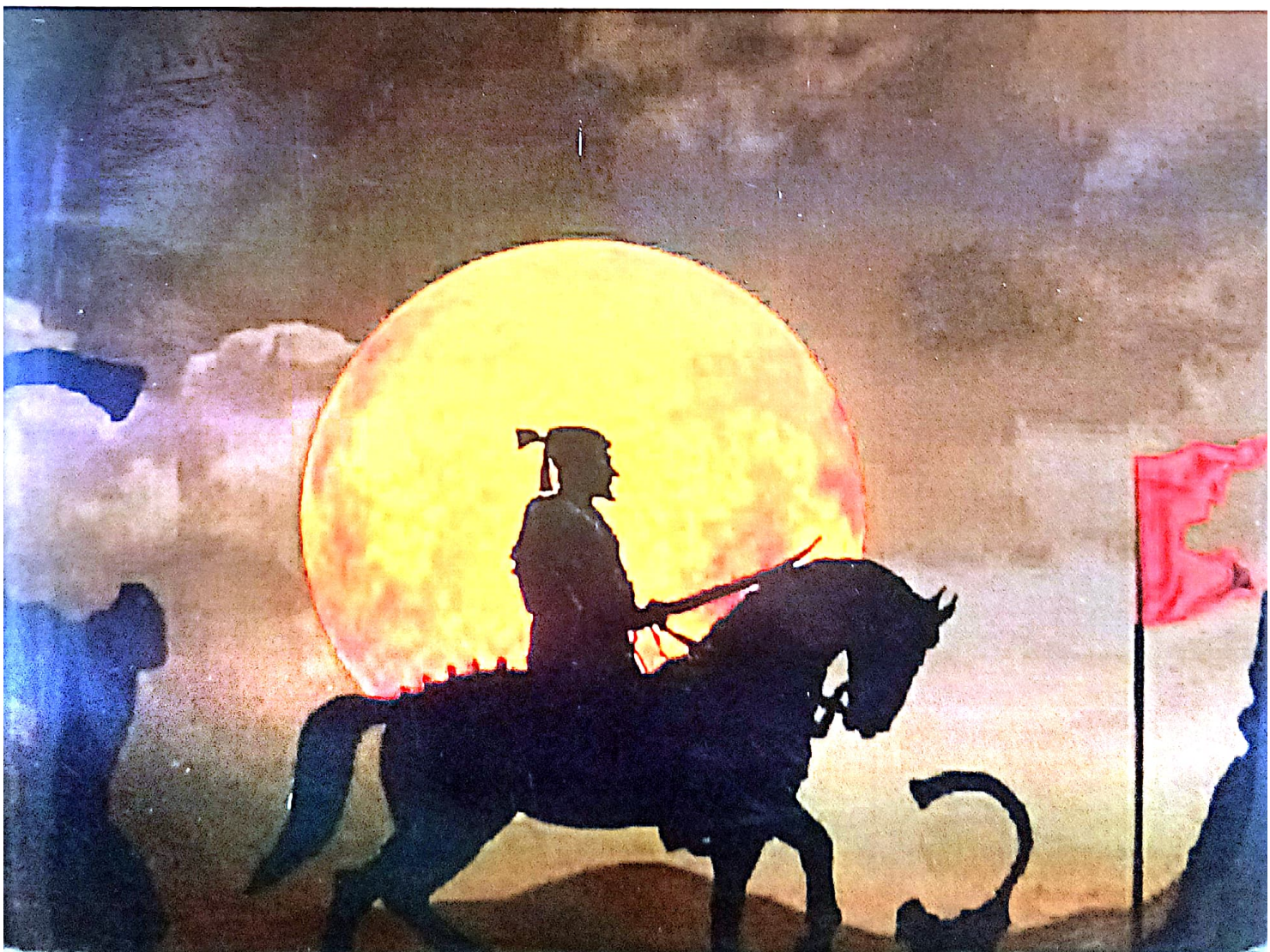

छायावादी काव्यों में राष्ट्रीयता की भावना

डॉ॰ शिव कुमार विश्वकर्मा

प्रगतिशील प्रकाशन

नई दिल्ली-110059

इस पुस्तक में ली गई रचनाओं की मौलिकता का प्रमाण एवं व्यक्त विचारों का दायित्व पूर्णतया सम्पादिका का है तथा इससे होने वाली किसी भी प्रकार की हानि के लिए शब्द संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशक का कोई भी दायित्व नहीं होगा।

ISBN : 978-93-93112-11-8

प्रकाशक–

प्रगतिशील प्रकाशन

एन–3/25, प्रथम तल, मोहन गार्डन,

उत्तम नगर, नई दिल्ली–110059 (भारत)

चलभाष : +91-9968277749

ई–मेल : pragatisheelprakashan@yahoo.in

छायावादी काव्यों में राष्ट्रीयता की भावना

मूल्य : ₹ 795.00

प्रथम संस्करण : 2022

© सुरक्षित

प्रस्तुत पुस्तक का किसी भी रूप में प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना मुद्रण, वितरण एवं पुनः प्रकाशन करना दण्डनीय अपराध है, तथा ऐसा करने पर कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

भारत में प्रकाशित–

'प्रगतिशील प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित। बंसल इण्टरप्राईजिज, नई दिल्ली द्वारा लेजर टाईपसेटिंग तथा विशाल कौशिक प्रिन्टर्स, शाहदरा, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

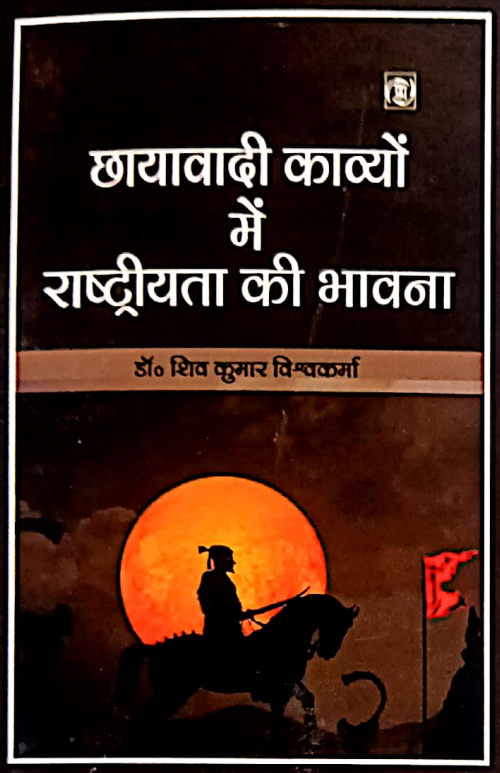

डॉ० शिवकुमार विश्वकर्मा

जन्म तिथि : 10.01.1966

पिता : स्व० जगनारायण विश्वकर्मा

माता : श्रीमती सुन्दरकली देवी

स्थायी पता : राजढोली, जपला, पलामू।

वर्तमान पता : विश्वकर्मा नगर, छतरपुर रोड, जपला, पलामू झारखण्ड-822116 (भारत)।

शैक्षणिक योग्यता : एम० ए० (द्वय), हिन्दी, समाजशास्त्र, पीएच० डी (2017)।

सम्प्रति : हिन्दी विभाग, ए० के० सिंह महाविद्यालय, जपता, पलामू।

मोबाईल : 9304669151

पुस्तक परिचय

छायावादी कवियों ने राष्ट्रीयता के जिस स्वरूप को व्याख्यायित किया है उसमें भारत की अखण्ड भौगोलिक एकता, धार्मिक एकसूत्रता औ सांस्कृतिक गरिमा के दर्शन होते हैं। राष्ट्रीयता हमारें गणतंत्रात्मक लोकतंत्र की विशिष्ट पहचान रही है। छायावादी काव्यों में सास्कृतिक नव-जागरण राष्ट्रीय भावना आदि का जों स्वरूप पाया जाता है, वह अत्यंत व्यापक भावभूमि पर आघृत है। छायावाद भारतीय संस्कृति से अनुप्राणित, भारतीय परिस्थितियों से अनुप्रेरित और प्रथम महायुद्ध के बाद के नवीन मानवतावादी आदर्शवाद पर आधारित हिन्दी की मौलिक काव्यधारा है।

Price: ₹ 795.00

ISBN: 978-93-93112-11-8

9 789393 112118

प्रगतिशील प्रकाशन

एन-3/25, प्रथम तल, मोहन गार्डन, उत्तम नगर, नई दिल्ली-59

ई-मेल: pragatisheelprakashan@yahoo.in

चलभाष: +91-9968277749

प्रेमचन्द के उपन्यासों में सामाजिक चेतना

डॉ. जय प्रकाश पाण्डेय
डॉ. शिव कुमार विश्वकर्मा

प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक चेतना

डॉ॰ जय प्रकाश पाण्डेय
हिन्दी विभागाध्यक्ष
संत जेवियर्स महाविद्यालय, राँची

डॉ॰ शिव कुमार विश्वकर्मा
हिन्दी विभाग
एस. के. एस. महाविद्यालय, जपला (पलामू)

सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस
नई दिल्ली-110059 (भारत)

इस पुस्तक में दी गई सामग्री एवं व्यक्त विचारों के मौलिकता का दायित्व पूर्णतः लेखकों/सम्पादकों का है तथा किसी भी प्रकार की होने वाली हानि के लिए शब्द संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशक का कोई भी दायित्व नहीं होगा।

ISBN : 978-93-5909-296-6

प्रकाशक–

आर डी पाण्डेय

सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस

एन–3/25, मोहन गार्डन, उत्तम नगर,

नई दिल्ली–110059 (भारत)

दूरभाष : +91-7042082850

E-mail: satyampub_2006@yahoo.com

प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक चेतना

मूल्य : ₹ 675.00

प्रथम संस्करण : 2024

© सुरक्षित

प्रस्तुत पुस्तक का किसी भी रूप में प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना मुद्रण, वितरण एवं पुनः प्रकाशन करना दण्डनीय अपराध है, तथा ऐसा करने पर कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

भारत में प्रकाशित–

श्री आर० डी० पाण्डेय द्वारा **'सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस'** के लिए प्रकाशित। सत्यम् प्रिंटोग्राफिक्स, नई दिल्ली द्वारा लेजरटाईप सेटिंग तथा विशाल कौशिक प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

विषय सूची

मन की बात (V)

1. हिन्दी उपन्यास का उद्‌भव-विकास 1
2. उपन्यासकार प्रेमचंद 12
3. प्रेमचंद के उपन्यास 18
4. सामाजिक चेतना का स्वरूप 38
5. सामाजिक चेतना की महत्ता 54
6. प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक चेतना का स्वरूप 66
7. प्रेमचंद के उपन्यासों में युगीन-चेतना 77
8. प्रेमचंद की औपन्यासिक सृजन प्रक्रिया 82
9. प्रेमचंद के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन 92
10. प्रेमचंद के उपन्यासों में यथार्थवादी दृष्टि 105
11. प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी विषयक अवधारणा 114
12. प्रेमचंद के होरी की अन्तर्चेतना 125

परिशिष्ट

प्रेमचंद का रचना-संसार तथा प्रेमचंद सम्बन्धित विविध रचनाएँ 130

अनुभूतियों का अहसास

(साझा काव्य-संकलन)

सम्पादक

डॉ. विजय कुमार पुरी डॉ. श्रीप्रकाश यादव

इस पुस्तक के किसी भी अंश को कवि की अनुमति के बिना पुनर्प्रकाशित या अनूदित करना अथवा किसी भी दृश्य, श्रव्य एवं प्रचार माध्यम में उपयोग करना वर्जित है।

मूल्य : पाँच सौ रुपये मात्र

ISBN : 978-93-5552-054-8

पुस्तक	:	अनुभूतियों का अहसास
सम्पादक	:	डॉ. विजय कुमार पुरी, डॉ. श्रीप्रकाश यादव
©	:	सम्पादकद्वय
प्रकाशक	:	**निखिल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स** 37, 'शिवराम कृपा' विष्णु कालोनी शाहगंज, आगरा-10 (उ.प्र.) मो. : 9458009531-38 e-mail : nikhilbooks.786@gmail.com website : www.nikhilbooks.in
संस्करण	:	प्रथम, 2022
मूल्य	:	**₹ 500 /- मात्र $ 20**
शब्द सज्जा	:	चिण्णु ग्राफिक्स
मुद्रक	:	श्रीपूजा प्रिन्टर्स

38. दिनेश पालदा 157
39. टीना कर्मवीर 161
40. अशोक कुमार यादव 165
41. वंदना राणा 169
42. डॉ. ऊषा गुप्ता 173
43. विनोद ध्रब्याल राही 177
44. मोनिका 181
45. मुदिता अग्रवाल 185
46. सुषमा देवी 189
47. विनोद कुमार 193
48. भूपेन्द्र कुमार त्रिपाठी 197
49. अनु ठाकुर 201
50. चर्चा 205
51. प्रो. डॉ. आलोक रंजन कुमार 209
52. तोषी गुप्ता 213
53. सुप्रिया सिन्हा 217
54. प्रेमपाल 221
55. रचना शर्मा 225
56. डॉ. बलराम गुप्ता 229

परिचय

नाम : प्रो. डॉ. आलोक रंजन कुमार
विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग, ए. के. सिंह कॉलेज, जपला, पलामू, झारखंड।

२. राज्य प्रमुख– मानवाधिकार मिशन, झारखंड।
३. राष्ट्रीय संयोजक– भारतीय अश्वमेघ पार्टी, भारत
४. प्रदेश कार्यकारिणी – अभाविप. झारखंड।
५. राष्ट्रीय सह–संयोजक – विश्ववाणी हिंदी संस्थान अभियान, भारत।
६. प्रदेश संयोजक – राष्ट्रवादी लेखक संघ, भारत।
७. राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय शताधिक वेबीनारों में संचालन एवं सहभागिता।
८. विभिन्न राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनारों में संचालन एवं सहभागिता।
९. विभिन्न राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाओं में आलेख प्रकाशन।
१०. "पलामू कमिश्नरी की बोलियों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन" विषय पर पीएच.डी. उपाधि हेतु शोध प्रबंध प्रकाशित, हिंदी विभाग, बीएचयू, वाराणसी।
११. अन्य – अनेक साहित्यिक संस्थानों के कार्यक्रम में सहभागिता।
१२. मेरी भी कविता– भाग–३ (साझा संग्रह)।
१३. विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा प्रकाशित स्मारिका में शोध–आलेख।
१४. प्रदेश संगठन मंत्री–सह–प्रवक्ता– झारखण्ड राज्य बारी संघ।
१५. राष्ट्रीय सलाहकार – राष्ट्रीय योद्धा बारी कल्याण महासमिति।

शिक्षा– १. एम. ए. द्वय– हिंदी, अंग्रेजी।
२. स्नातकोत्तर भाषा विज्ञान (संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी)।
३. यूं. जी. डी. रसियन, पीएच. डी. (बी. एच. यू., वाराणसी)
४. विद्याविशारद (हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग)

पुरस्कार/समयमान –

१. हिन्दी साहित्य शिरोमणि–२०२१
२. हिन्दी साहित्य रत्न–२०२१
३. श्रेष्ठ व्यंग्यकार –२०२१
४. कलम की धार–२०२१
५. काव्य गौरव सम्मान –२०२१– साहित्य आजकल
६. राष्ट्रीय गणतंत्र हिन्दी काव्य सम्मान ।
७. अनेक राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार/सम्मान/प्रमाण–पत्र (शताधिक)

अपना भी टाइम आयेगा

अपना भी टाइम आयेगा
जब सुबह सवेरे उठकर हम टहलने जाएंगे
अपने दोस्तों के साथ
खुद भी बहलने जाएंगे
अपना भी टाइम आयेगा।
अपनी बिटिया को कबड्डी खेलाने जाएंगे
खेल देख देख कर अपना भी मन बहलाएंगे
अपना भी टाइम आयेगा।
सज धज कर अपने कॉलेज पढ़ाने जाएंगे
बच्चों के संग – संग
अपना टाइम बिताएंगे
अपना भी टाइम आयेगा।
कहीं टूर पर लेकर बच्चों को घुमाने जाएंगे
परिवार के संग
हम पिकनिक मनाने जाएंगे
अपना भी टाइम आयेगा।

तुम्हारे बिना

तन्हाई में जीने न आता मुझे
तन्हा जियूँ कैसे तुम्हारे बिना

पिंजरे में थी तो तुम्हीं को बुलाया
गगन में जियूँ कैसे तुम्हारे बिना

तेरे अनुज करते हैं माँ की ठिठोली
फिर भी तेरी माँ कुछ न बोली

न आवाज बचा है न अश्क बचे हैं
रोदन करूँ तो कैसे तुम्हारे बिना

सुषमा बिखेरी जो तूने कश्मीर में
सुराज करूँ तो कैसे तुम्हारे बिना

भोजपुरी रीति–रिवाज

तकइ के तक धिन
बनल मकई के लावा।
भोजपुरी के हइ शान
सगरो जग में फैलावा।

अंग्रेजी झाड़े से का होई
हिन्दी हमर शान बा।
भोजपुरी हमार रीत रिवाज
भोजपुरी अभिमान बा।

भारत गाँव में बसेला
इ सभे के जबान बा।
पेट भरे वाला केहू नइखे
जुगाड़ करेवाला किसान बा।

आधा खाना खा के
आधा खाना फेकेला।
केतना मेहनत से अनाज
सब किसान उपजावेला ।

माई मउसी हेरा गइल
मॉम आंटी गोहरावेला।
पापा डैड, बेटा बोलैं
बाबूजी! के बोलावेला?

अनुभूतियों का अहसास

डॉ. विजय कुमार पुरी   डॉ. श्रीप्रकाश यादव

Nikhil Publishers & Distributors
37, 'Shivram Kripa' Vishnu Colony,
Shahganj, Agra-282010 (U.P.) India
E-mail : nikhilbooks.786@gmail.com

ISBN : 978-93-5552-054-8
9789355520548
₹500.00 $ 20

ALSO AVAILABLE ON
amazon apps Available at amazon
kindle
Scan QR Code

9458009531-38 | www.nikhilbooks.in | Nikhil Publishers Agra

माँ

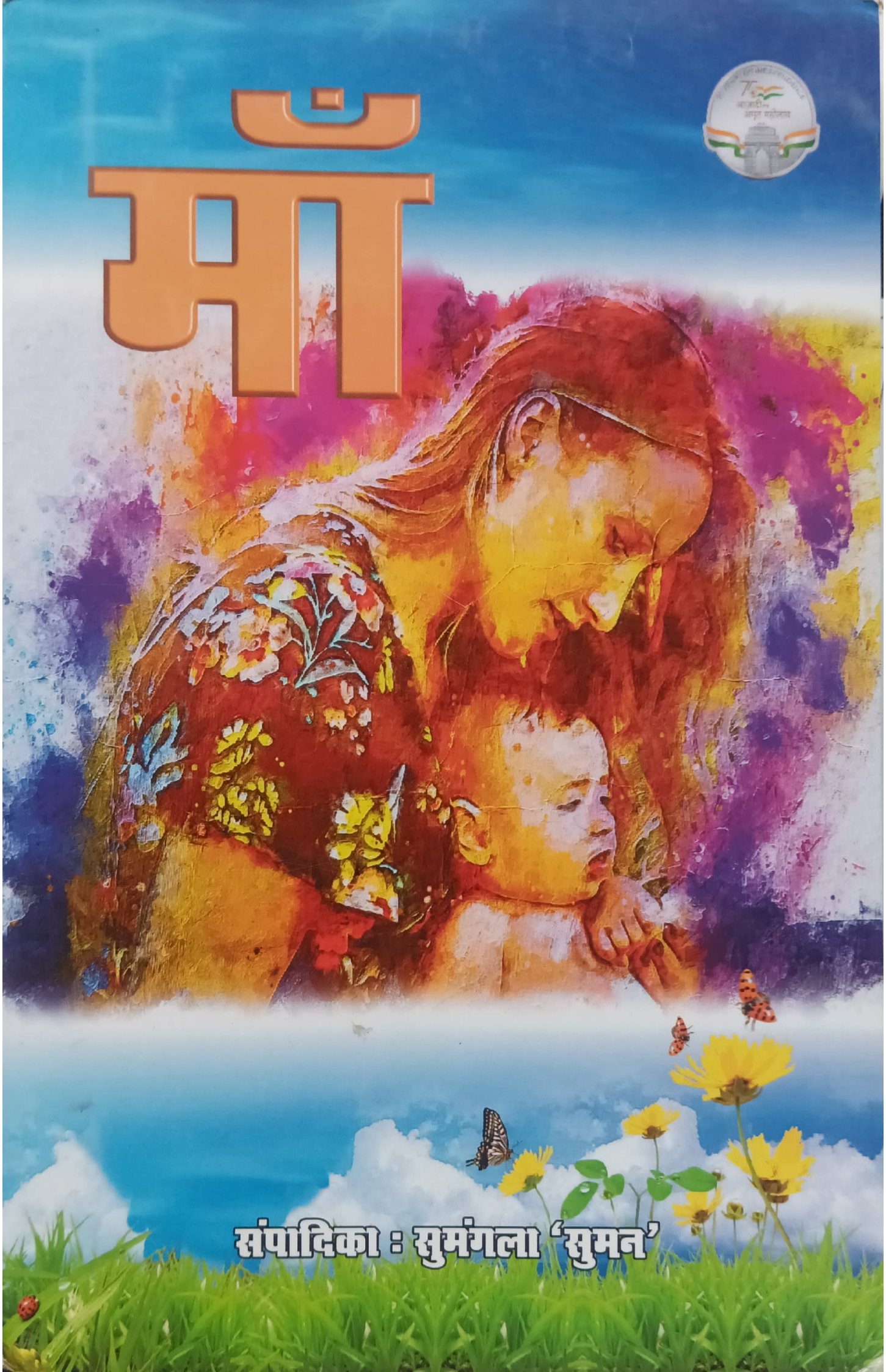

संपादिका : सुमंगला 'सुमन'

माँ

सर्वाधिकार	:	© बी.एम.पी. पब्लिशर
संपादिका	:	सुमंगला 'सुमन'
प्रथम संस्करण	:	नवम्बर, 2022
मुद्रक	:	एस.आर.एन.पी. प्रिंटर्स, 1070A, राजीव नगर, गुड़गाँव, हरियाणा – 122001
ISBN	:	978-93-91143-58-9
मूल्य	:	₹ 250.00

प्रकाशक

ब्राइट एम.पी. पब्लिशर
1081ए, नियर चाचा चौक, एन.आई.टी., फरीदाबाद,
हरियाणा, (भारत) – 121005
www.bmppublisher.com, www.bukskart.com

23. डॉ. जगदीश चंद्र वर्मा 'अनंत'.....72-74
24. कवि बुद्धि सागर गौतम.....75-77
25. बृजेश कुमार वर्मा.....78-80
26. गायत्री पाण्डेय.....81-83
27. अनिल कुमार वर्मा "मधुर".....84-86
28. राज बहादुर "राना".....87-89
29. अनूप कुमारी.....90-92
30. गोवर्धन बिसेन "गोकुल".....93-95
31. श्री चिरंजीव बिसेन.....96-98
32. धर्मचंद शर्मा.....99-101
33. वीरे सागर महासर.....102-104
34. वृन्दा प्रजापति.....105-107
35. कांति सिंह.....108-110
36. अशोक चाढक.....111-113
37. डॉ. आलोक रंजन कुमार.....114-116
38. सुशीला कुमारी.....117-119
39. सुमंगला 'सुमन'.....119-120

*****

रचनाकार परिचय

नाम : डॉ. आलोक रंजन कुमार

1. विभागाध्यक्ष - हिन्दी विभाग, ए.के. सिंह कॉलेज, पोस्ट - जपला, जिला-पलामू, राज्य-झारखंड।
2. प्रदेश संगठन सचिव सह प्रवक्ता, झारखंड राज्य बारी संघ।
3. प्रमुख सलाहकार-राष्ट्रीय योद्धा बारी कल्याण महासमिति, भारत।
4. राष्ट्रीय संगठन महामंत्री सह प्रदेश संगठन सचिव-भारतीय अश्वमेघ पार्टी (रजि.राजनीतिक पार्टी), भारत।
5. प्रदेश कार्यसमिति सदस्य-अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, झारखंड।
6. प्रदेश संयोजक - राष्ट्रवादी लेखक संघ, झारखंड।
7. प्रदेश संयोजक - विश्ववाणी हिन्दी संस्थान अभियान, झारखंड।
8. प्रदेश संयोजक - अथाई आशा इंटरनेशनल चैप्टर रचनाकार साहित्य समूह, झारखंड।
9. राज्य प्रमुख - मानवाधिकार मिशन, झारखंड।
10. संरक्षक - नवयुग चेतना विकास मंच तथा टाइगर्स-XI क्रिकेट क्लब हुसैनाबाद, पलामू।
11. पूर्व सचिव तथा वर्तमान मीडिया प्रभारी- राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ, नी. पी. विश्वविद्यालय पलामू।
12. अनेक अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय तथा विश्वविद्यालय स्तरीय पुरस्कार सम्मान एवं प्रशस्ति पत्र प्राप्त।
13. प्रकाशन - १. पलामू कमिश्नरी की बोलियों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन (पी-एच.डी. की अनुसंधान पुस्तक), २. मेरी भी कविता भाग (साझा संग्रह) भाग-3, ३. अनुभूतियों का अहसास (साझा काव्य

माँ

माँ तेरा पुत्र कहीं राम है तो कहीं रावण है।
मगर तेरा वात्सल्य हर जगह पावन है।

माँ तू तो ममतामयी करूणा की प्रतिमूर्ति है।
कहीं तू यशोदा कहीं सीता कहीं सरस्वती है।

नदियों में बसी माँ गंगा यमुना सरस्वती है।
पहाड़ों में बसी शारदा वैष्णो माता पार्वती है।

कोई किसी से कम नहीं सब माँ रूपवती है।
सबकी माँ पुत्र-पुत्री की दृष्टि में भगवती है।

*****

माँ

ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान

(साझा संकलन)

—:संकलनः—

मुकेश कुमार सोनकर

By

दिव्यज्योति पब्लिकेशन

Publishers & Distributors

First published by Divyajyoti Publications

Raipur(Chhattisgarh), 492013

Email: divyajyotipublications.rpcg@gmail.com

Divyajyoti Publication, Raipur(CG)

Copyright ©Divyajyoti Publications

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the Author or Publishers.

Title: मां–ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान(साझा संकलन)

Language: Hindi

ISBN:- 978-93-340-5373-9

Price:-

No. of Pages:-

Compiled and designed By :- Mukesh Kumar Sonkar

Typeset in Times New Roman by Jyoti Sonkar

Cover page designed by Divyanshi

Printed by :-

माँ–ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान

------- *परिचय विवरण* -------

1. नाम : प्रो. डॉ. आलोक रंजन कुमार
2. माता-पिता का नाम : स्व. मानमती देवी स्व. राजा राम
3. पत्नी का नाम : रश्मि प्रकाश
4. जन्म तिथि : 23 - 02 – 1972 जन्म स्थान : जपला जिला : पलामू
5. शिक्षा : स्नातक - १. हिन्दी भाषा एवं साहित्य,२. रूसी भाषा एवं साहित्य, ३. वकालत, ४. शिक्षा विशारद।

स्नातकोत्तर - १. हिन्दी भाषा एवं साहित्य, २. भाषा विज्ञान, ३. अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य।

पी-एच. डी. - हिन्दी (पलामू कमिश्नरी की बोलियों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन -- भाषाएं : हिन्दी, मगही, भोजपुरी, नागपुरी, संथाली, मुंडारी, ब्रिजिया, बिरहोर, कोरवा, हो, कुंड़ुंख कर (ओरांव भाषा)

6. वर्तमान में कार्य (पेशा) : हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं प्राध्यापक, ए के सिंह कॉलेज जपला तथा राज्य प्रमुख -- मानवाधिकार मिशन झारखण्ड
7. संस्थापक/अध्यक्ष : संस्थापक - गौरव साहित्य मंच पलामू , विश्ववाणी हिंदी संस्थान अभियान झारखण्ड, संयोजक - राष्ट्रवादी लेखक संघ झारखण्ड, राज्य प्रमुख - (स्वास्थ्य एवं सुरक्षा) मानवाधिकार मिशन झारखण्ड, अध्यक्ष- सोन घाटी पुरातत्व परिषद् पलामू ,झारखण्ड , संयोजक - अथाई आशा इंटरनेशनल साहित्य एवं समन्वय समूह झारखण्ड आदि।
8. हिंदी प्रचार के लिए किए गए उल्लेखनीय योगदान : विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं के माध्यम से हिंदी साहित्य सम्मेलन का आयोजन एवं सहभागिता।
9. लेखन विधा : कविता, दोहा, ग़ज़ल, हाइकु, सॉनेट, लघुकथा, कहानी, संस्मरण, निबंध, आलेख, साक्षात्कार
10. भाषा साहित्य/गायन वादन/अभिनय/शिक्षा / समाजसेवा / चिकित्सा के क्षेत्र में आपके द्वारा किया गया उल्लेख योगदान लिखें : प्रतिवर्ष लगभग सौ विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करना। काव्य पाठ, भक्ति वन्दना गायन
11. प्राप्त सम्मान/पुरस्कार : शताधिक अंतरराष्ट्रीय सम्मान/पुरस्कार तथा दो सौ से अधिक राष्ट्रीय सम्मान/पुरस्कार/ प्रशस्ति-पत्र/प्रमाण पत्र।
12. हाल का पद तथा दायित्व : हिन्दी विभागाध्यक्ष सह नैक को-ऑर्डिनेटर,ए के सिंह कालेज, जपला। उपरोक्त सभी पद पर आसीन।
13. अब तक प्राप्त मुख्य उपलब्धि : १. हिन्दी सचिवालय मॉरीशस तथा सृजन आस्ट्रेलिया से अंतरराष्ट्रीय अनेक सम्मान। २. तीन आर्य भाषा परिवार की मातृभाषाओं, छः मुंडा परिवार की मातृभाषाओं, तथा एक द्रविड़ परिवार की बोली पर शोध कार्य।
14. वर्तमान पता : "राजभवन" मुहल्ला - लम्बी गली, पोस्ट - जपला,

जिला - पलामू, राज्य - झारखण्ड, पिन कोड – 822116

माँ–ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान

माँ ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान

माँ ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान
माँ का जग में सबसे ऊंचा पायदान

माँ श्रृष्टि के आरंभ में दी थी प्राणदान
ब्रह्मा विष्णु शिव को दी थी अभयदान

माँ तेरी शक्ति से जग क्यों अनजान
तू ही पूजा, तू ही भक्ति, देती वरदान

तूने ही दिया ज़ुबान और आत्मज्ञान
माँ तुझको पाया तो पाया ये ब्रह्मज्ञान

कभी न भूल सकता तेरा अवदान
तूने ही तो पूरा किया मेरा अरमान

करती दिनभर नि: शुल्क श्रमदान
तुझसे रौशन होता पूरा खानदान

ईश्वर से तो मैं क्या दूनिया अनजान
पर मेरी दृष्टि में, माँ तू ही भगवान

तुझसे ही तो जग में मेरी पहचान
तू ही मेरा अतीत भविष्य वर्तमान

माँ से अधिक जग में न कोई महान
शब्द कम पड़े, कैसे करूं यशगान

तू जन्मदात्री, पालनकर्तृ, धैर्यवान
माँ ! ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान

✍ डॉ. आलोक रंजन कुमार

माँ–ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान

नारी शक्ति को नमन

संकलन : मुकेश कुमार सोनकर

First published by Divyajyoti Publications

Raipur(Chhattisgarh), 492013

Email: divyajyotipublications.rpcg@gmail.com

Copyright ©Divyajyoti Publications

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the Author or Publishers.

Title: नारी शक्ति को नमन (काव्य संग्रह)

Language: Hindi

ISBN:- 978-93-340-4075-3

Price:- 249

No. of Pages:- 140

Compiled and designed By :- Mukesh Kumar Sonkar

Typeset in Times New Roman by Jyoti Sonkar

Cover page designed by Divyanshi

Printed by :- Divyajyoti Publications Raipur Chhattisgarh

Divyajyoti Publication, Raipur (CG)

रचना अनुक्रम

स.क्र.	रचनाकार का नाम	पृष्ठ क्र.
1	आ. डॉ.नीलम पाण्डेय 'नीलिमा'जी, खटिमा, उत्तराखण्ड	9
2	आ. सुनील कुमार जी, नकुड, सहारनपुर, उत्तरप्रदेश	13
3	आ. मोहन तिवारी जी, मुम्बई	16
4	आ. अंजली सारस्वत शर्मा जी, लखनऊ, उत्तरप्रदेश	19
5	आ. डॉ. आलोक रंजन जी, पलामू झारखण्ड	22
6	आ. अनिता गोस्वामी जी, नोएडा	27
7	आ. सुमा मण्डल जी, पखान्जूर कांकेर छत्तीसगढ़	30
8	आ. पूर्णिमा ढिल्लन जी, नासिक महाराष्ट्र	33
9	आ. राकेश राज भाटिया जी, थुरल–कांगड़ा हिमाचलप्रदेश	37
10	आ. तरुण राय कागा जी, बाड़मेर राजस्थान	41
11	आ. उषा जोशी जी, देवास मध्यप्रदेश	45
12	आ. रेणुबाला सिंह जी, गाजियाबाद, उत्तरप्रदेश	49
13	आ. अनिल कुमार केसरी जी, बूंदी राजस्थान	53
14	आ. दुर्गेश मोहन जी, बिहटा पटना बिहार	56
15	आ. संदीप कुमार कटारिया जी, करनाल हरियाणा	59
16	आ. थानूराम साहू जी, लोरमी मुंगेली छत्तीसगढ़	62
17	आ. दिनेश दत्त शर्मा 'वत्स' जी, गाजियाबाद,उत्तरप्रदेश	66
18	आ. सुनीता प्रयाकर राव जी वासुनि तेलंगाना	69
19	आ. लता सेन जी, इंदौर, मध्यप्रदेश	74
20.	आ. भानू प्रिया देवी जी, देवघर झारखण्ड	77
21	आ. सुखमिला अग्रवाल जी, जयपुर राजस्थान	80
22	आ. मनोहर चौबे 'आकाश' जी, जबलपुर मध्यप्रदेश	84
23	आ. रमाकांत शर्मा जी, डांडेली, कर्नाटक	90
24	आ. डॉ. अभिषेक मेहरोत्रा जी, आगरा उत्तरप्रदेश	94
25.	आ. मीनाक्षी सुकुमारन जी, नोएडा	97
26	आ. स्व.प्रेमशीला कुशवाहा जी, कुशीनगर उत्तरप्रदेश	101
27	आ. डॉ. सोनिया मेहरोत्रा जी, आगरा उत्तरप्रदेश	104
28	आ. शरीफ खान जी, कोटा राजस्थान	107
29	आ. गुड़िया गौतम जी, जलगांव महाराष्ट्र	112
30	आ. मुकेश कुमावत'मंगल'जी, रघुनाथपुरा, टोंक, राजस्थान	115
31	आ. विशाल जैन''पवा'' जी, ललितपुर उत्तरप्रदेश	118
32	आ. मृदुला वर्मा जी, कानपुर उत्तरप्रदेश	121
33	आ. पिन्की शाह''दिशा'' जी, अहमदाबाद गुजरात	124
34	आ. मुस्कान केशरी जी, मुजफ्फरपुर बिहार	128
35	आ. बलराम यादव जी, देवरा मध्यप्रदेश	130
36	आ. अशोक गोयल जी, पिलखुवा हापुड़	133
37	आ. मुकेश कुमार सोनकर''सोनकरजी'' रायपुर छत्तीसगढ	137

1.जय माता शारदे

ऐसा करो, **माँ** शारदे।
ज्ञानी बनें , उपहार दे।
करता सदा, यह प्रार्थना।
माता सुनें, नित याचना।

देवी सुनें , भव तारणी।
संकट सभी, दुख हारिणी।
करते रहें , हम साधना।
पूरी करें, मनोकामना।

जीवन रहे , सबका सुखी।
दिखे नहीं , कोई दुःखी।
ममतामयी , हम मानते।
समदृष्टि रखें, सब जानते।

उपकार **माँ** सब पर करें।
भंडार सुख, हर घर भरें।
तेरी कृपा, हमसब चाहते।
बल अरु बुद्धि,सब मांगते।

जय माता शारदे !
त्रुटि तू विसार दे!

✍ प्रो. डॉ. आलोक रंजन कुमार

2.आओ मिल नव वर्ष मनाएं

रहे अशिक्षा नहीं जमीं पर
दायित्व है शिक्षकों ! हमीं पर
आओ शिक्षाविदों चलो पढ़ाएं
आओ मिल नव वर्ष मनाएं।१।

शिकायत न रहे इंसान की
सब संतानें हैं भगवान की
सनातन धर्मी ज्योति जलाएं
आओ मिल नव वर्ष मनाएं।२।

पाप कर्मों में फंसा है भुवन
मां पिता के नक्शे चले सुवन
आओ इन्हें सही मार्ग दिखाएं
आओ मिल नव वर्ष मनाएं।३।

आर्थिक युग के नाजुक रिश्ते
टूट कर कभी नहीं जुड़ते
आओ रिश्ते टूटने से बचाएं
आओ मिल नव वर्ष मनाएं।४।

जात पात का कुभेद मिटा दो
भू से सारे धर्म भेद हटा दो
सनातन में सबको मिलाएं
आओ मिल नव वर्ष मनाएं।४।

विश्व की नारी का सम्मान करें
दहेज त्याग अभिमान करें
स्वयं को आत्मनिर्भर बनाएं
आओ मिल नव वर्ष मनाएं। ५।

आलोक दीप जग में जलाएं
आओ मिल नव वर्ष मनाएं !

✍ प्रो. डॉ. आलोक रंजन कुमार

3.रामनवमी

घी रुई से ज्योति जलती
मिट्टी का दीपक जलता
जीवन की गाड़ी चलती
आपसी प्रेम जो पलता

राम आज जब आयेंगे
प्रसन्न हो जायेगी सीता
अयोध्यावासी भी गायेंगे
उर्मिला भी होगी हर्षिता

भरत मिलने आयेंगे
शुभ बेला आई पुनीता
नागर दीप जलायेंगे
खुश होंगी तीनों माता

रावण से लंका को जीता
मुक्त हुई लंका से सीता।

✍ प्रो. डॉ. आलोक रंजन कुमार

देश के सुप्रसिद्ध साहित्यकारों का काव्य संकलन

वसंतोत्सव काव्य संग्रह

संकलनकर्ता: मुकेश कुमार सोनकर

First published by Divyajyoti Publications

Raipur(Chhattisgarh), 492013

Email: divyajyotipublications.rpcg@gmail.com

Divyajyoti Publication, Raipur(CG)

Divyajyoti Publications and its logo are the trademarks of Divyajyoti Publication™

Copyright ©Divyajyoti Publications

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the Author or Publishers.

Title: वसन्तोत्सव (काव्य संग्रह)

Language: Hindi

ISBN:- 978-93-340-1945-2

Price:- 249

No. of Pages:- 70

Compiled and designed By :- Mukesh Kumar Sonkar

Typeset in Times New Roman by Jyoti Sonkar

Cover page designed by Ravikant Bansal

Printed by :-

रचना अनुक्रम

स. क्र.	रचनाकार का नाम	पृष्ठ क्रमांक
1	आ. डॉ. आलोक रंजन कुमार जी	11
2	आ. चेतना साबला जी, अंधेरी मुंबई	12
3	आ. डॉ. राजेश तिवारी 'मक्खन' जी, झांसी, उत्तरप्रदेश	13
4	आ. दुर्गेश मोहन जी, बिहटा, पटना, बिहार	14
5	आ. जयंती खमारी "रुही" जी, रायगढ़, छत्तीसगढ़	15
6	आ. जयकुमार ठाकर जी, सूरत, गुजरात	16
7	आ. सुनीता प्रयाकर राव जी, वासुनि, तेलंगाना	17
8	आ. रेणुबाला सिंह जी, गाजियाबाद, उत्तरप्रदेश	18
9	आ. रविप्रकाश पाण्डेय जी, देवरिया, उत्तरप्रदेश	19
10	आ. डॉ. नीलम पाण्डेय 'नीलिमा' जी, खटिमा, उधमसिंहनगर, उत्तराखण्ड	20
11	आ. राकेश राज भाटिया जी, थुरल, कांगड़ा हिमाचल प्रदेश	21
12	आ. डॉ. ब्रम्हदेव कुमार जी, रमला, गोड्डा, झारखंड	22
13	आ. डॉ. अशोक जाटव 'राही' जी, भोपाल, मध्यप्रदेश	23
14	आ. डॉ. दक्षा जोशी 'निर्झरा' जी, गुजरात	24
15	आ. कुमार जितेन्द्र जी, उन्नाव, उत्तरप्रदेश	25
16	आ. रमाकांत शमा जी, डांडेली, कर्नाटक	26
17	आ. सुनीता अग्रवाल जी, गाजियाबाद, उत्तरप्रदेश	27
18	आ. हरिदास बड़ोदे 'हरिप्रेम' मेहरा जी, आमला, बैतूल, मध्यप्रदेश	28
19	आ. सुशीलचन्द्र वाजपेयी जी, लखनऊ, उत्तरप्रदेश	29
20	आ. मुकेश कुमावत 'मंगल' जी, रघुनाथपुरा, टोंक, राजस्थान	30
21	आ. रविनारायण शुक्ल जी, लालगंज, रायबरेली, उत्तरप्रदेश	31
22	आ. डॉ. विजय पाटिल जी, बड़वानी, मध्यप्रदेश	32
23	आ. बलराम यादव जी, देवरा	33
24	आ. नरेन्द्र सोनकर 'कुमार सोनकरन' जी, करछना, प्रयागराज, उत्तरप्रदेश	34
25	आ. दिलीप भाई पटेल जी, मालवण, महिसागर, गुजरात	35
26	आ. भेरुसिंह चौहान 'तरंग' जी, झाबुआ, मध्यप्रदेश	36
27	आ. डॉ. अनिता गोस्वामी जी, रुड़की, उत्तराखण्ड	37
28	आ. सुनील कुमार जी, नकुड, सहारनपुर, उत्तरप्रदेश	38
29	आ. अशोक बाजपेयी 'सजल' जी, हरदोई, उत्तरप्रदेश	39
30	आ. रामनिवास शर्मा जी, गया, बिहार	40

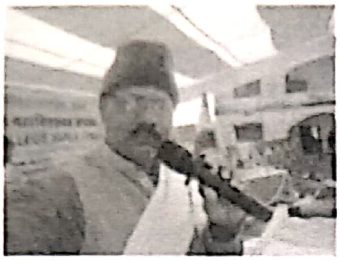

डॉ. आलोक रंजन कुमार जी

जय शारदे भवानी

जय शारदे भवानी, तुम सा कोई न दानी,

अज्ञानी विद्यार्थियों को, ज्ञान भर देती है।

जय जननी भारती, मैं गाऊं तेरी आरती।

अकिंचन संतानों को, धनी कर देती है।

माता तू वरदायिनी, तू ही तो वाक् दायिनी,

मूक-बधिर बच्चों को, वाक् वर देती है।

तू ही पुस्तक धारिणी , तू ही तो वीणा धारिणी,

अक्षर ज्ञान सभी को, सम वर देती है।

*****

✍ भक्त कवि -- डॉ. आलोक रंजन कुमार

पल पल बदलता जीवन

संपादिका : सुमंगला सुमन

पल पल बदलता जीवन

सर्वाधिकार	:	© ब्राइट एम.पी. पब्लिशर
संपादिका	:	सुमंगला 'सुमन'
प्रथम संस्करण	:	अक्टूबर, 2022
मुद्रक	:	एस.आर.एन.पी. प्रिंटर्स, 1070A, राजीव नगर, गुड़गाँव, हरियाणा - 122001
ISBN	:	978-93-91143-36-7
मूल्य	:	₹ 250.00

प्रकाशक

ब्राइट एम.पी. पब्लिशर
1081ए, नियर चाचा चौक, एन.आई.टी., फरीदाबाद,
हरियाणा, (भारत) - 121005
www.bmppublisher.com, www.bukskart.com

अनुक्रमणिका

क्रं.	नाम रचनाकार	पेज. सं.
1.	मनोरमा शर्मा 'मनु'	7-9
2.	सुरेश लाल श्रीवास्तव	10-12
3.	मुकुंद कुमार सिंह	13-15
4.	आशुतोष तिवारी "आशुमन"	16-18
5.	अनेक राम सांख्यान	19-21
6.	प्रमोद कुमार चौहान	22-24
7.	पं. मुक़ेश चतुर्वेदी "मीर"	25-27
8.	राघवेन्द्र प्रताप	28-30
9.	बाल मुकुन्द द्विवेदी	31-35
10.	पवन कुमार भारद्वाज	36-38
11.	सर्वेश कांत वर्मा	39-41
12.	डॉ. आलोक रंजन कुमार	42-44
13.	सुधाकर कांत चक्रवर्ती	45-47
14.	अंजू सिंह	48-50
15.	ममता अरोरा	51-53
16.	अशोक चाढक	54-56
17.	दिलीप कुमार शर्मा (दीप)	57-59
18.	कुन्दन वर्मा "पूरब"	60-62
19.	हरि प्रकाश गुप्ता सरल	63-65
20.	चिरंजीव बिसेन	66-68
21.	इंजी. गोवर्धन बिसेन "गोकुल"	69-71

नाम : डॉ. आलोक रंजन कुमार
पता : जपला, पलामू, झारखंड
Ph. : xxxxxxxxxx

पल पल घटता जीवन

दुनिया कहे बढ़ता है पन
आलोक कहे घटता है पन
बैठकर सोचो स्व अंतर्मन
क्यूँ पल-पल घटता जीवन।

कभी था अपना शैशवपन
फिर आया अपना बालपन
फिर कैशोर्य, पश्चात् यौवन
यूँ पल-पल घटता जीवन।

कितने बीते आषाढ़ सावन
कितने जले पुतले रावण
कितने व्रत, पूजन, हवन
वो पल पल घटता जीवन।

सत्कर्म से हरा हो उपवन
दुष्कर्म से मैली गंगा पावन
साधना से बने ऋषि च्यवन
वो पल पल घटता जीवन।

मिथ्या तो मत करो प्रदर्शन
पर्यावरण बचा सजा वन
तो रह पाएगा सुन्दर वन
ना पल पल घटता जीवन।

जंगल का करोगे संरक्षण
ऑक्सीजन ही हमारा जीवन
जल ही तो है हमारा जीवन
ये पल पल घटता जीवन!

*****

पल-पल बदलता जीवन

जन्म पूर्व अंकुरता जीवन
जन्म होने से खेलता जीवन
शिशु काल से खेलता जीवन
बाल्यकाल से पढ़ता जीवन।1।

कैशोर्य में परखता जीवन
युवावस्था निखरता जीवन
वयस्क तो संवारता जीवन
प्रौढ़ा में तो संभालता जीवन।2।

मोह माया पालता आजीवन
वृद्धावस्था जब लाता जीवन
मोह माया को त्यागता जीवन
प्रभु-भक्ति में लगाता जीवन।3।

अंत समय आने पर तन
बिस्तर पर पलता जीवन
पुत्रादि से सेवा पाता जीवन
अंत में आत्मा त्यागता जीवन। 4।

*****

नाव काग़ज़ की आंसुओं का दरिया

(भाग ३)

बाल कृष्ण "बाग़ड़ी"
(बालू सिंह बुडानिया)

शीर्षक: नाव काग़ज़ की आंसुओं का दरिया
संकलक: बाल कृष्ण बाग़ड़ी
Copyright © 2023 by Dead of Writes Publication
सभी अधिकार सुरक्षित. पुस्तक समीक्षा में संक्षिप्त उद्धरणों के उपयोग को छोड़कर प्रकाशक की स्पष्ट लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक या उसके किसी भी भाग को किसी भी तरह से पुन: प्रस्तुत या उपयोग नहीं किया जा सकता है।
भारत में मुद्रित।
डेड ऑफ राइट पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित।

"ISBN-978-93-91153-27-4"

Mrp: 200/-

अनुक्रमणिका

स. न.	सह-लेखक/लेखिका	पृष्ठ संख्या
०१	क्षमा श्रीवास्तवा	९
०२	मो. आलमगीर	१२
०३	मुनीश चंद्र सक्सेना	१५
०४	डॉ. आलोक रंजन कुमार	१८
०५	राजन तेजी	२१
०६	संतोष श्रीवास्तव	२४
०७	स्वाती राठौर	२७
०८	अवधेश सिंह राठी	३०
०९	सीमा गर्ग “मंजरी”	३३
१०	कमलदीप कौर	३६
११	हरमोहिंदर सिंह	३९
१२	गुंजन अग्रवाल “अनहद”	४२
१३	पंकज सिंह "दिनकर"	४५
१४	मंतशा "कातिब"	४८
१५	रवि कुमार	५१
१६	अरुण शर्मा	५४
१७	श्री धुमिल सेठ	५७
१८	स्वाति शर्मा	६०
१९	डॉ. पल्लवी गुंजन	६३
२०	अमित अल्प	६६

सह-लेखक: डॉ. आलोक रंजन कुमार

लेखक का नाम डॉ. आलोक रंजन कुमार हैं। विभागाध्यक्ष - हिन्दी विभाग, ए. के. सिंह कॉलेज, पोस्ट - जपला, जिला - पलामू, राज्य - झारखंड। प्रदेश संगठन सचिव सह प्रवक्ता, झारखंड राज्य बारी संघ। प्रमुख सलाहकार - राष्ट्रीय योद्धा बारी कल्याण महासमिति, भारत। राष्ट्रीय संगठन महामंत्री सह प्रदेश संगठन सचिव - भारतीय अश्वमेघ पार्टी (रजि. राजनीतिक पार्टी), भारत। प्रदेश कार्यसमिति सदस्य - अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, झारखंड। प्रदेश संयोजक - राष्ट्रवादी लेखक संघ, झारखंड। प्रदेश संयोजक - विश्ववाणी हिन्दी संस्थान अभियान, झारखंड। प्रदेश संयोजक - अथाई आशा इंटरनेशनल चैप्टर रचनाकार साहित्य समूह, झारखंड। राज्य प्रमुख - मानवाधिकार मिशन, झारखंड। संरक्षक - नवयुग चेतना विकास मंच तथा टाइगर्स-XI क्रिकेट क्लब हुसैनाबाद, पलामू। पूर्व सचिव तथा वर्तमान मीडिया प्रभारी- राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ, नी. पी. विश्वविद्यालय पलामू। अनेक अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय तथा विश्वविद्यालय स्तरीय पुरस्कार सम्मान एवं प्रशस्ति पत्र प्राप्त।

आंसू

जो देखते हो आंखों में आंसू
ये तोहफा बेवफा संगमरमर का है
ये सिर्फ आंसू नहीं हैं दोस्त,
ये सारे लहू मेरे ज़ख्मों ज़िगर का है
चौंको न यारो ये दास्तां ख़ुद से लिखी गई है
मर गया था मैं, मगर कंकाल बच गई है
ख़ुदा के फरिश्ते आए कब्र में, सुनी मेरी दास्तां,
रहमत से मुझमें दुबारा जान डाल दी गई है

दी मुझको उन्होंने कलम पाक मेरे हाथों में
तब लिख दी मैंने दास्तां अपनी बातों बातों में
गुज़रे ज़माने की किताब खोल पढ़ता चला गया
तब मैंने लिख दी वो बातें जो गुजरी थी रातों में
बहुत तरह के ग़मों से मुलाकात हुई थी
कितने ही महजबीनों से मेरी बात हुई थी
एक दिल में अरमां रह जाते, गर तू ना मिलती
दास्तान-ए-ग़म सुना के मोहब्बत की बात हुई थी

एक बची थी अंतिम दांव, वह भी मैंने लगा दी
बुझती हुई सांसो को मैंने, तेरे सहारे जगा दी
कितने बार जिया हूं मैं, कितने बार मरा हूं मैं
फिर भी जीते जी तूने, मेरी चिता में आग लगा दी

मिट्टी का बना था, आग लगी राख हो गया,
तूफ़ान आया राख उड़े पुनः मिट्टी में मिल गया
जब किसी आशिक ने पढ़ी मेरी किताब "आलोक"
आंसू गिरे वरक पोंछे हुरुफ़ हाथ में मिल गया

मेरी भी कविता

(साझा-संग्रह)

भाग–3

सम्पादक
डॉ. श्रीप्रकाश यादव

इस पुस्तक के किसी भी अंश का प्रतिलिपिकरण, ऐसे ढंग से भंडारण, जिससे इसे पुन: प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानान्तरण, किसी भी विधि से, यांत्रिक, फोटो प्रतिलिपि, इलेक्ट्रॉनिक्स रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य रीति प्रयोग बगैर पूर्व लिखित अनुमति के नहीं किया जा सकता है।

ISBN : 978-93-90599-14-1

- पुस्तक का नाम : मेरी भी कविता (भाग-3)
- सम्पादक : डॉ. श्रीप्रकाश यादव
- © प्रकाशक
- **प्रथम संस्करण : 2020**
- **मूल्य : ₹ 500/- मात्र ($ 20)**
- *शब्द सज्जा :*
  श्री हरी ग्राफिक्स
- *मुद्रक :*
  श्री पूजा प्रिन्टर्स
- प्रकाशक :
  निखिल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
  37, 'शिवराम कृपा' विष्णु कालोनी शाहगंज, आगरा
  मो. : 9458009531-38
  e-mail : nikhilbooks.786@gmail.com
  visit us : www.nikhilbooks.in

27. श्रीमती एकता शर्मा, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) 117
28. श्रीमती शुभा शुक्ल निशा, रायपुर (छ.ग.) 121
29. डॉ. ममता भारती, आगरा (उ.प्र.) 125
30. श्री वरुण चौधरी, आगरा (उ.प्र.) 129
31. श्रीमती अंकिता सिन्हा, जमशेदपुर (झारखंड) 133
32. श्रीमती इला सागर रस्तोगी, मुरादाबाद (उ.प्र.) 137
33. श्री नन्द लाल मणि त्रिपाठी 'पीताम्बर', गोरखपुर (उ.प्र.) 141
34. श्री मनीष शुक्ला, लखनऊ (उ.प्र.) 147
35. श्री धनंजय सिंह, जौनपुर (उ.प्र.) 151
36. डॉ. कप्तान सिंह 'संघर्षी', फिरोजाबाद (उ.प्र.) 155
37. कु. आँचल पटेल, सोनभद्र (उ.प्र.) 159
38. श्री प्रतीक संघर्षी, फिरोजाबाद (उ.प्र.) 163
39. श्री शिवा पंचकरण, धर्मशाला (हि.प्र.) 167
40. श्रीमती अर्चना सरोहा, बागपत (उ.प्र.) 171
41. डॉ. शैलेन्द्र पाराशर, उज्जैन (म.प्र.) 175
42. श्री सतीश कुमार, शिमला (हि.प्र.) 179
43. डॉ. वी. एन. सिंह, कानपुर (उ.प्र.) 183
44. श्री एकांत नेगी, गाजियाबाद (उ.प्र.) 191
45. डॉ. नीरज कुमार, बुलंदशहर (उ.प्र.) 195
46. श्री दिनेश धर्मपाल, मण्डी (हि.प्र.) 199
47. कु. प्रियंका यादव, देवरिया (उ.प्र.) 203
48. डॉ. आलोक रंजन कुमार, झारखंड 207
49. देवेन्द्र कश्यप 'निडर', सीतापुर (उ.प्र.) 212
50. कुमार रवि 216

पुस्तक और मनुष्य

वो जब बेहयाई पार कर देता है
खुद को वो अश्लील कर देता है।
कोई अच्छी किताब लिख देता है,
कोई बुरी किताब लिख देता है।
यह जो किताब की अहमियत है
पढ़ने वाले पर निर्भर करता है।
कोई उसे तराजू में तौल देता है
कोई गल्ला–दुकान में बेच देता है।
कोई तो उन पन्नों को फाड़कर
सामान की पुड़िया बना देता है।
फिर वे पन्ने गुमनामी के रास्ते में
कोई पैरों से निर्बुद्धि रौंद देता है।
लोग कहें काम निकला दुख बिसरा
नौकरी लगी किताब हुआ कचरा।
खुदगर्ज प्राणी भी आदमी का,
आजकल यही हश्र कर देता है।
लेकिन यकीन मानो ओ ख़ुदगर्ज
खोद के खुद को गड्ढे में गिरा देता है।
मैं भी एक पुरानी किताब हूं यारों,
वो मेरा भी यही हश्र कर देता है।
वक्त की शिला पर मैं वो इबारत हूं,
जिसे मेरा कर्म अच्छा रच देता है।।

ग़ज़ल

हर रातें तो अंधेरी लगती हैं पर,
हर सुबह भी धुंधला धुंधला लगता है।

हर नदियां तो कावेरी लगती हैं पर,
जल कुछ गंदला गंदला लगता है।

हर पुराना शख्स अपना लगता है,
पर कुछ बदला–बदला लगता है।

गिरते तो हैं कोई कोई ही शख्स पर,
हर शख्स संभला संभला लगता है।

अब चमन में फूल तो खिलते हैं पर,
हर फूल कंटीला कंटीला लगता है।

फूल को तोड़ कर रख तो लेते हैं पर,
हर हाथ चोटिला चोटिला लगता है।

होली तो अब भी मनाते हैं पर,
हर रंग खून से नहला नहला देता है।

जिस जिस शहर घूमता हूं हर शहर,
अब कोरोना–कोरोना लगता है।

नसीब नहीं अब अपने शहर की,
अपना शहर अब बेगाना बेगाना लगता है।

समकालीन साहित्य संवेदना के स्वर

संपादक
डॉ. रीना प्रताप सिंह

समकालीन साहित्य : संवेदना के स्वर

SAMKALIN SAHITYA : SAMVEDNA KE SWAR

By *Dr. Reena Pratap Singh*

© डॉ. रीना प्रताप सिंह

ISBN : 978-93-91602-51-2

प्रकाशक

साहित्य संचय

बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871418244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस

ग्राम : बहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (बिहार)

नेपाल ऑफिस

राम निकुंज, पुतलीसड़क
काठमांडौ, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2021

कवर डिजाइन : प्रदीप कुमार

मूल्य : ₹ 300/- (भारत, नेपाल)

मूल्य : $ 7 /- (अन्य देश)

मुद्रक : श्रीबालाजी ऑफसेट, ई-15, सेक्टर-ए 5/6ए ट्रोनिका सीटी, गाजियाबाद, उ.प्र.

अनुक्रम

1. 'संभव है' निबंध संग्रह में मानवीय संवेदना — 9
   रेखा कुमारी सिंह
2. विष्णु प्रभाकर के रूपकों, रूपान्तरों तथा ध्वनि नाटकों का शिल्पगत अध्ययन — 15
   डॉ. कल्पना मौर्य
3. हरियाणवी कवि अहमदबख्श थानेसरी और उनकी रामायण: सांस्कृतिक दृष्टि — 30
   प्रोफेसर डॉ॰ कृष्ण चंद रल्हाण
4. समकालीन लघुकथा : मानवीय पक्ष की पड़ताल — 44
   चन्द्रेश साहू
5. प्रगतिशील मंच, काव्य और जाति : मराठवाड़ा रंग भूमिका रंग मंच विचार विरोध और व्यवधन — 51
   भालेराव श्रीकांत नंद कुमार
6. मृदुला गर्ग के वंशज उपन्यास में मानवीय संवेदना — 58
   कु. अंजली खलखो
7. अधूरी देह का दंश झेलते अर्धनारीश्वर — 64
   सूर्यबाला मिश्रा
8. समकालीन हिन्दी साहित्य विविध विमर्श आदिवासी विमर्श — 71
   डॉ. रीना प्रताप सिंह
9. समकालीन साहित्य : अवधारणा, व्याप्ति एवं राष्ट्रबोध — 75
   डॉ. रामनारायण शर्मा

'संभव है' निबंध संग्रह में मानवीय संवेदना

रेखा कुमारी सिंह
शोध छात्रा
मगध विश्वविद्यालय
बोध गया, गया

ज्ञानचंद मर्मज्ञ का जन्म 26 अगस्त 1959 को उतर प्रदेश के एक छोटे से कस्बे सैदपुर में हुआ। यह जन्म से भारतीय, शिक्षा से अभियंता, रोजगार से उद्यमी और स्वभाव से कवि हैं। अपेक्षाकृत कम हिन्दी भाषी क्षेत्र बेंगलुरू में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार और विकास के साथ-साथ स्थानीय भाषा के साथ समन्वय के लिए पिछले 25 वर्षो से सतत प्रयत्नशील हैं। "संभव है" मर्मज्ञ जी की 19 निबंध का संग्रह है, जिसमें मानवीय संवेदना को झकझोरने तथा दिल की गहराइयों में उतर जाने वाले, इन निबंधों को मानव जीवन के अंतर्द्वद के विविध रूप देखने को मिलते है, जो हमें भीतर झांकने एवं गहन चिंतन के लिए मजबुर करते है। समसामयिक विषयों पर उनका चिंतन का प्रतिफल रूप निबंध बेशक आकार में बहुत बड़े नहीं है, लेकिन "देखन में छोटा लगे घाव करे गंभीर" की तर्ज पर अंतर्मन तक प्रभावित करता है। लेखक ने अपनी दुर दृष्टि से ऐसे शब्द संसार का निर्माण किया है, जिसमें हमारे यथार्थ का मुख पक्ष बिना किसी शोर-शरावे के वहुत कुछ कह कर पाठक को स्पंदित कर जाता है। एक-एक शब्द संवेदना के तह को उधेर कर रख देने वाला वास्तविकता के धरातल पर आश्रित अपने।

वह मन की बात इतनी कोमलता से उधेड़ कर रख देते है, मानो फूल की पंखुड़ियों से वारूद का सीना चीर दिया हो। कवि उदय प्रताप सिंह का इनके निबंधों पर कहना है कि "आकार में छोटे होते हुए भी बिहारी की दोहो के भांति मर्म भेदी है।"